महाराजा अग्रसेन

अ. भा. साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा

शुभाशीर्वाद

डॉ० कृष्णचन्द्र सुमन
744 बिहारीपुरा मथुरा
8-11-08

मुख्य निदेशक
अखिल भारतीय
साहित्यकार अभिनन्दन समिति
744 बिहारीपुरा मथुरा 281001

महाराजा अग्रसेन

(पौराणिक, ऐतिहासिक ब्रज-भाषा उपन्यास)

उपन्यासकार :

डॉ० श्याम सुन्दर 'सुमन' अग्रवाल

डी० लिट्० (कैलिफोर्निया, अमेरिका)

प्रकाशक :

अखिल भारतीय

साहित्यकार अभिनन्दन समिति

मथुरा (उ० प्र०) भारत

प्रकाशित १९९९

●

प्रकाशक :

अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति

५४४-बिहारी पुरा, माता गली, मथुरा-२८१००१

(उत्तर प्रदेश) भारत

●

सहयोग राशि :

एक सौ एक रुपये

●

लेखक :

डॉ० श्याम सुन्दर सुमन अग्रवाल

●

विशेष सहयोग :

श्री गिरधारी लाल सराफ, डॉ० शान्ति सेठ

●

प्रचार–प्रसार–मण्डल :

डॉ० श्याम लता 'सुमन' विश्वास : डॉ० अशोक सक्सैना 'अनुज'

डॉ० दयाशंकर शुक्ल 'सजग' : डॉ० पी० के० विश्वास

श्रीमती बसुन्धरा डोभाल : भगवान सिंह 'भास्कर'

डॉ० वीरेन्द्र कुमार दुबे : रिखी राज चौहान

डॉ० इज़हार अहमद खान 'उमरी' : भीम राव हरफोड़े 'नीर'

देवराज काला : कु० रीना शर्मा

दीपचन्द्र अग्रवाल 'दीपक' : संजय भारद्वाज

★━★

समर्पण

आदरणीय अग्र० महर्षि

श्री नन्द किशोर गोईन्का

१९९ कृष्णा मण्डी, हिसार (हरियाणा)

के

कर - कमलों

में

सादर समर्पित !

५४४-बिहारी पुरा, माता गली
मथुरा-२८१००१
(उत्तर प्रदेश) भारत

डॉ० श्याम सुन्दर सुमन
उपन्यासकार

उपन्यासकार का संक्षिप्त परिचय

डॉ० श्याम सुन्दर सुमन

जन्म—५ जनवरी १९३४ को आर्य नगर, मथुरा में श्री सूरजमल पेशकार के यहाँ। सन् १९६१ में उ० प्र० सरकार से पुरस्कृत। १५० से अधिक मौलिक एवं सम्पादित पुस्तकें प्रकाशित। 'भारत की माँ-इन्दिरा गाँधी' कविता एवं लघुकथा ग्रन्थ पर तत्कालीन प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गाँधी द्वारा सम्मानित पत्र। हिन्दी में हास्यरस का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास 'ताँबे के सिक्के' सन् १९७५ में प्रकाशित और लंदन में मंचित। महाकवि 'सूरदास' पर इस विषय का सर्वप्रथम उपन्यास 'सूरदास' प्रकाशित। 'हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास' सन् १९६५ के सम्पादक। 'महाराजा अग्रसेन' के उपन्यासकार।

डॉ० सुमन पर 'डॉ० श्याम सुन्दर सुमन और उनका साहित्य' सन् १९९६ में प्रकाशित।

सन् १९९४ से के० के० बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा संचालित 'सरस्वती सम्मान और व्यास-सम्मान' के पुस्तक-प्रस्तावक।

अनेक अभिनन्दन ग्रन्थों के सम्पादक।

बर्ल्ड एकेडमी आफ आर्टस् एण्ड कल्चर द्वारा डी० लिट्० प्राप्त कर चुके हैं।

हिन्दी फीचर फिल्म 'महा-मिलन' के सम्वाद लेखक जो प्रसारित हो चुकी है।

सम्मानोपाधियाँ--हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने सन् १९९३ में साहित्य महोपाध्याय (पी-एच० डी०) प्रदान की है। साहित्य-मार्तण्ड, विद्यावाचस्पति, वारिधि, आचार्य, साहित्य भूषण, ब्रज-साहित्याचार्य, साहित्य-वाचस्पति (द्वय) विद्यासागर (डी० लिट्०) डाक्टर आफ फिलासिफी, महामहोपाध्याय से सम्मानित।

अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति मथुरा के अवैतनिक मुख्य निदेशक एवं ग्रन्थों के सम्पादक।

आदरणीय श्याम सुन्दर जी,

बड़े हर्ष की बात है कि 'महाराजा अग्रसेन' का जीवन-चरित्र उपन्यास के रूप में आपने पूर्ण कर लिया है····आपका अथक प्रयास सुन्दर ही होगा।

आप जैसे वरिष्ठ साहित्यकार से सृजन में नवीनता एवं रोच-कता ही अपेक्षित है।

आपका उपन्यास अग्रवाल-समाज में एक नया मील का पत्थर बने, इसी शुभकामना के साथ—

—डॉ० स्वराज्यमणि अग्रवाल

२८-७-९९

आदरणीय श्री सुमन जी — गुरु-पूर्णिमा

आप द्वारा लिखित पौराणिक, ऐतिहासिक, ब्रजभाषा उपन्यास 'महाराजा अग्रसेन' निश्चित रूप से अग्रवाल समाज की भावी पीढ़ी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इससे समाज को दिशा प्राप्त होगी। आप जैसे अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यकार की लेखनी अवश्य ही रंग लायेगी। इसी आशा के साथ—

—रमेशचन्द्र सर्राफ
'बाबा की जय'
श्री अग्रसेन मानव सेवा मण्डल,
मथुरा.

अग्रोहा विकास ट्रस्ट

६-एम० भगत सिंह मार्केट
नई दिल्ली-११०००१
दिनांक १२-१०-९६

५९१/९६
प्रिय महोदय,

आपका एक पत्र अग्रोहा धाम से मेरे पास भेजा गया है।

हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने महाराजा अग्रसेन पर एक उपन्यास लिखा है, जो प्रकाशित होने जा रहा है।

—बालेश्वर अग्रवाल
अ० भा० मन्त्री

१०-१०-९६

आपका पत्र उपन्यास 'महाराजा अग्रसेन' शीघ्र प्रकाशन के बारे में प्राप्त हुआ। स्मरण के लिए आभारी हूँ। उपन्यास के द्वारा महाराजा अग्रसेन के बारे में अधिक जानकारी समाज को प्राप्त होगी तथा योग्य और अधिकृत रूप से प्रकाशित होने वाली सामग्री रहेगी ?

इसी शुभकामना के साथ—

आपका
—स्वरूप चन्द्र गोयल
अ० भा० मन्त्री
अग्रोहा विकास ट्रस्ट, मुंबई.

रामेश्वर दास गुप्त

डी-३५, साउथ एक्सटैंशन भाग-एक
नई दिल्ली-११००४९
२४-४-९७

आदरणीय श्री श्याम सुन्दर जी 'सुमन'

सादर नमस्कार !

मालूम हुआ कि आपका 'महाराजा अग्रसेन' उपन्यास प्रकाशित हो रहा है।

—रामेश्वर दास गुप्त

गौरी शंकर मोदी

१५ सितम्बर १९९७

प्रिय डॉ० श्याम सुन्दर जी,

आपका पत्र क्र० ८४/९६, दिनांक ३-९-९७ का मिला। मुझे यह जानकर अपार खुशी हुई कि आप द्वारा लिखित उपन्यास 'महाराजा अग्रसेन' को विश्व विद्यालयी पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किये जाने की आशा है।

देश के नव-निर्माण के लिए अब यह अति आवश्यक हो गया है कि भावी पीढ़ी को केवल किताबी - ज्ञान से ही न बाँधकर रखा जाय, वरन् उनके चरित्र-निर्माण पर भी विशेष ध्यान दिया जाय।

मुझे आशा है कि आप द्वारा लिखे उपन्यास से विद्यार्थीगण 'महाराजा अग्रसेन' द्वारा बताये रास्ते को भली - भाँति समझ सकेंगे एवं उनके सिद्धान्तों को अपने जीवन में ढालने की कोशिश करेंगे।

यह उपन्यास भावी पीढ़ी के लिए अवश्य ही कारगर सिद्ध होगा।

धन्यवाद !

—गौरी शंकर मोदी
सेंचुरी भवन, डॉ० एनी बेजेन्ट रोड, वरली
मुम्बई-४०००२५

卐

रमेश चन्द्र अग्रवाल

चेयरमेन कम मैनेजिंग डायरैक्टर
'भास्कर' ग्रुप आफ पब्लिकेशन्स

६ प्रेस कम्पलैक्स
महाराणा प्रताप नगर
भोपाल-४६२००१

३५६९ ८-९-९७

प्रिय डॉ० श्याम सुन्दर जी,

आपका पत्र दिनांक ३-९-९७ को मिला। मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि विश्व विद्यालयों के पाठ्य-क्रम में सम्मिलित कराने के उद्देश्य से आपके द्वारा लिखित उपन्यास 'महाराजा अग्रसेन' का प्रकाशन किया जा रहा है। मेरी तो यह धारणा है कि उक्त उपन्यास न केवल बालकों के लिए अपितु समाज के सभी बन्धुओं के लिए उपयोगी और पठनीय होंगा तथा महाराजा अग्रसेन के शासन-काल में अपनाई गई प्रशासकीय, सामाजिक और आर्थिक नीतियों से आज का शासन-तन्त्र भी लाभान्वित हो सकता है।

आपका यह प्रयास निःसन्देह प्रशंसनीय है। मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित हैं।

भवदीय

—रमेश चन्द्र अग्रवाल

लेखकीय

इस उपन्यास के नायक महाराजा अग्रसेन की राजधानी अग्रोहा थी, जिसका प्राचीन नाम था—आग्रेय गण। किसी समय यह अत्यन्त समृद्ध था। अब इस स्थान पर यहाँ ६५० एकड़ में ८७ फुट, ऊँचे थेह-समूह दृष्टिगोचर होते हैं।

अग्रोहा के अवशेष आक्रमणकारियों द्वारा किये आक्रमणों की कथा आज भी कहते सुनाई पड़ रहे हैं। अनेक बार विदेशी आक्रमणों द्वारा इसको उजाड़ा गया और अनेक बार यह बसा है।

सबसे पहले सन् १८८८ में अग्रोहा में सी० जे० राजर्स ने १ फुट की गहराई तक, एक लघु टीले की खुदाई का शुभारम्भ किया था। जिसमें ईंटों से बनी गलियों और फर्श के निशान मिले थे। साथ ही राख के ढेर भी पाये गये थे, जो इस बात की गवाही देते हैं कि यहाँ पर कभी भयंकर अग्नि कांड किया गया था। विदेशी आक्रमणों ने इसे अग्नि से भस्म करने का प्रयास किया होगा।

टीले की खुदाई में मिट्टी से निर्मित खिलौने भी पाये गये थे। इसके अतिरिक्त मनके, टूटी हुई मूर्तियाँ, सिक्के भी मिले थे, जिन पर आग से झुलसने के निशान थे, कुछ ईंटें भी मिली थीं।

सी० जे० राजर्स की दी गई रिपोर्ट से अग्रोहा के सम्बन्ध में खास ठोस जानकारी तो प्राप्त नहीं हो सकी, किन्तु अग्रोहा का सामने आने वाला वह रूप डॉ० परमेश्वरी लाल गुप्त के कथनानुसार सम्भवतः बारहवीं शताब्दी का माना जाना उचित है, क्योंकि सन् ११९८ ई० में मोहम्मद गौरी ने (इतिहास के अनुसार) अग्रोहा पर आक्रमण किया था तथा उसे अग्नि - कांड कर राख के ढेर में परिवर्तित कर दिया होगा तथा पाये गये अवशेष उसी काल के रहे होंगे।

सन् १९३८-३९ ई० में श्री हीरालाल श्रीवास्तव ने भारतीय पुरातत्व विभाग के अन्तर्गत अग्रोहा के थेह में खुदाई कार्य करवाया जिससे टीले के नीचे एक बस्ती रहने के चिन्ह पाये गये। बस्ती में बने मकानों के चिन्हों से ज़ायज़ा लेने पर ज्ञात हुआ कि मकानों

निर्माण पक्की ईंटों से किया गया होगा। निवास-स्थान एक-दूसरे से अलग पाये गये। कमरों के दरवाजे बने थे।

वहाँ की खुदाई में मिट्टी से बनाई गईं अनेक मोहरें, मिट्टी का पका हुआ फलक, जला हुआ अनाज, भस्मित भग्न मूर्तियाँ, स्वर्ण निर्मित एक मनका तथा जला जलाया एक ग्रन्थ मिला हैं। ग्रन्थ की विषय-वस्तु क्या थी-जलजाने के कारण उसका ज्ञान तो उपलब्ध नहीं हो पाया, परन्तु लिपि द्वारा यह अनुमान लगाया गया कि उसका काल नवीं शताब्दी स्वीकार किया गया।

मिट्टी के पके हुए फलक में नवीं सदी की लिपि द्वारा संगीत को सरगम 'सर गम, स, नि, धप, म ग रि, सा' लिखी है। जिससे यह प्रमाणित होता है कि उस समय संगीत विद्या पराकाष्ठा पर थी।

इस खुदाई में ताँबे के कड़े, कानों के बुन्दे भी प्राप्त हुए हैं, जो यह प्रमाणित करते हैं कि तब नारियाँ आभूषण ग्रहण करती थीं तथा वहाँ के कारीगर कलाकारी में पारंगत थे।

इसके अतिरिक्त टोंटी लगे मिट्टी के पके हुए करुवे, हण्डे, हाँडी, लोटे, कटोरे, प्याले, धूपदानी, छिद्र वाले बर्तन, तश्तरी, ताँबे की खड्ग, चम्मच, मन्दिर के भग्न अवशेष पाये गये थे। कुबेर, बारहा महिषमर्दिनी दुर्गा की चार भुजायुक्त प्रतिमा प्राप्त हुई है। नवीं सदी का अनुमान इनके देखने से लगाया जाता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त सिल, लोड़ा, बेलन, चकला, मुद्रायें भी मिली हैं।

समाजरत्न डॉ. स्वराज्यमणि अग्रवाल के अनुसार अग्रोहा की खुदाई से प्राप्त सैकड़ों सिक्के जिन पर विभिन्न लिपि एवं चिन्ह हैं विशिष्ट सामग्री है। चाँदी के पाँच सिक्के मिट्टी के बर्तन में चिपके हुए मिले हैं, जो पश्चिमोत्तर देशों और ग्रीक के राजाओं के हैं। ये ईसा पूर्व पहली एवं दूसरी शताब्दी के हैं। एक मुद्रा पर बृक्ष, सूर्य इत्यादि बने हैं, जिनसे यह पुष्ट होता है कि गुप्त काल के पहले की यहाँ की बस्ती है।

एक अन्य बर्तन में इक्यावन चौकोर सिक्के मिले हैं। इन सिक्कों पर एक तरफ अग्रोदक - अगाच्च अंकित है और सिक्कों की

दूसरी तरफ उन पर 'वृषक' अथवा 'वेदिका' की आकृति है। इनसे यह पुष्ट होता है कि वहाँ अग्रोहा जनपद का प्रमाण सम्मत अस्तित्व था।

खुदाई में एक चाँदी का सिक्का गुप्त वंश का, एक सिक्का उत्तर-वर्ती कुषाण शासक का और एक कुशाण शासक विमकदफिस का है, जिनसे यह पुष्ट होता है कि अग्रोहा में कुषाण एवं गुप्त काल का अस्तित्व था।

सिक्कों को देखकर यह भी पुष्ट होता है कि ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में अग्र लोग अपनी श्रेणी में विद्यमान थे तथा आग्रेय अथवा अग्रों ने इसको बनाया था। आग्रेय, अग्र, अग्रश्रेणी नाम से वे जन-समूह जाने जाते थे।

निदेशालय हरियाणा सरकार के पुरातत्व विभाग की १६७८-७६ की रिपोर्ट के अनुसार यह स्थान महाभारत में आग्रेय गणतन्त्र था। अनुमानुसार इसको महाराजा अग्रसेन द्वारा बसाया गया था।

यह नगर (अग्रोहा) हरियाणा से २२ किलो मीटर तथा दिल्ली से १६० किलो मीटर के अन्तर पर एक खेड़े के रूप में अवस्थित है, जो वर्तमान में एक साधारण से ग्राम के रूप में है। यहाँ की आबादी ३००-४०० घर हैं, इसके निकट ही थेह के रूप में प्राचीन राजधानी अग्रोहा के अवशेष सैकड़ों एकड़ में फैले हुए हैं।

ईसवी पूर्व दो सौ सदी के पश्चात् अग्रोहा कई बार उजड़ा और बसा। अग्रोहा पर तोमरों और चौहानों ने आक्रमण किया। कुषाण तथा भार शिव नागवंश द्वारा इस पर अपना अधिकार बनाये रखने का प्रयास किया। उज्जैन के राजा समरजीत ने अपनी कुचालों का इस पर पासा फैंका। बारहवीं सदी के आखिर में मोहम्मद गौरी तथा गजनवी ने तो इसे अग्नि में भस्म करने के प्रयास किये।

ऐतिहासिक प्रमाण साक्षी हैं, इस बात के कि अग्रोहा में अदम्य साहस था। कभी दानी हरभजन शाह की उदारता ने तो कभी मातृ-भूमि प्रेमी दीवान नन्नूमल जैसी महान विभूतियों ने इतका नव-निर्माण कराया।

इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी के लेखानुसार फिरोज शाह

तुगलक के काल में अग्रोहा था। इब्नबतूता इतिहासकार के उल्लेखानुसार 'हिसार-ए-फिरोजा' के निर्माण-कार्य में अग्रोहा के अवशेषों को प्रयोग में लाया गया था। सम्भवत: फिरोज खाँ तुगलक ने अग्रोहा के अवशेषों की सामग्री को निर्माणकार्य में लगाया हो, क्योंकि हिसार से अग्रोहा २२ किलो मीटर के अन्तर पर था।

पटियाला के दीवान नन्नूमल अग्रवाल ने अग्रोहा को फिर से बसाने (१७६५-१७८१) और फिर से निर्माण का सद् प्रयास किया। हिसार के उनके अधिकार में आते ही उनके द्वारा एक किला बनवाया गया, जिसके अवशेष अब भी विद्यमान हैं। वह दीबान नन्नूमल के किले के नाम से पुकारा जाता है।

महाराजा अग्रसेन से सम्बन्धित विशेष ऐतिहासिक साक्ष नहीं मिलते। उनके सम्बन्ध में 'उरूचरितम' 'महालक्ष्मी ब्रत कथा' जनश्रुतियों और प्राचीन संग्रहीत वंशावलियों में प्राप्त हुआ है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'अग्रवालों की उत्पत्ति' शीर्षक से एक पुस्तक का प्रणयन किया था जिसका आधार—भविष्य पुराणोक्त महालक्ष्मी ब्रत कथा थी। कहते हैं यह उनको एक पुस्तकालय से प्राप्त हुई थी।

महालक्ष्मी ब्रत कथा के नायक राजा अग्र हैं, जो सम्भवत. बाद में अग्रसेन नाम से जाने गये। 'अग्र' नाम के कारण ही उनके वंश का नाम 'अग्रवंश' हुआ होगा तथा उनके द्वारा जो नगर बसाया गया बाद में उसका नाम 'अग्रेय' पड़ा।

'महालक्ष्मी ब्रत कथा' के अनुसार प्रताप नगर के राजा धनपाल की छठवीं पीढी में राजा वल्लभ के यहाँ महाराजा अग्रसेन का जन्म हुआ था।

महाराजा अग्रसेन के जन्म - काल के सम्बन्ध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है।

भाटों के गीत खन्हें त्रेता युग में जन्में सिद्ध करते हैं—

'अश्विनी शुक्ल प्रतिपदा त्रेता पहले वर्ण
अग्रवाल उत्पन्न हुए, सुनि भारवे शिवकर्ण।'

अनेक विद्वान इनका जन्म का काल द्वापर का अन्तिम चरण और कलियुग का प्रारम्भ स्वीकारते हैं। महाभारत में महाराज कर्ण के विजय-प्रसंग के सन्दर्भ में आया नीचे लिखा श्लोक उद्धृत है :—

भद्रान, रोहितकांश्चैव आग्रे यानमालवानपि।
गणान् सर्वान् विनिर्जित्यनीतिकृत प्रहसन्निव॥
—महाभारत वन पर्व २५५ : २०

यही सर्वमान्य है कि उनका जन्म द्वापर के अन्त और कलियुग के आरम्भ में हुआ था।

जन्म के बारहवें दिन शिशु अग्र, का नामकरण संस्कार हुआ तथा उसका नाम 'अग्र' रखा गया। प्रसन्नता के हर्षातिरेक में महाराज बल्लभ ने यमुना के कूल पर 'अग्रपुर' नामक नये नगर की स्थापना की।

शिशु का लालन - पालन लाढ़ - चाव से हुआ। उनकी शिक्षा-दीक्षा प्राचीन प्रणाली के अनुसार हुई। बाल्यकाल में ही उन्होंने वेद-शास्त्र, अस्त्र-शस्त्र, अर्थनीति, राजनीति आदि विद्यायें सीख ली थीं जिनके सम्बन्ध में उपन्यास विस्तार पूर्वक बतलाता है

समाज रत्न डॉ० स्वराजमणि अग्रवाल जबलपुर के अनुसार 'इतिहास नई-नई शोधों से खण्डित-मण्डित होता रहता है। नये-नये तथ्यों के आलोक में अनेक संशोधन, परिवर्तन, परिवर्द्धन सम्भावित है। अब तक अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल के इतिहास के मुख्य आधार उरुचरितम एवं अग्रवंश वैश्यानुकीर्तनम-ग्रंथ अथवा अग्रोहा के खण्डहरों से प्राप्त पुरातात्विक अवशेष ही थे, किन्तु सौभाग्य से जैमिनीकृत महाराज अग्रसेन का मूल उपाख्यान हाल ही में आम गाँव के श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल को प्राप्त हुआ, जो श्रीमद् भागवत का अन्तिम अध्याय है। यह भोज-पत्र पर अंकित है और अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। सम्पूर्ण कथानक संस्कृत में है। महाराज अग्रसेन का काल महाभारत युद्ध के बाद का है और इस ग्रन्थ में अग्रसेन जी को महाराज परीक्षित से पन्द्रह दिन बड़ा बताया गया है। परीक्षित के स्वर्गारोहण के बाद प्रतिशोध की भावना से प्रेरित जन्मेजय ने नागयज्ञ आरम्भ किया। संसार के सर्प उसमें झुलस गये। तक्षक तो

परोक्षित के काल का कारण था। वह इन्द्र के सिंहासन से जा लिपटा। जन्मेजय ने ऋषियों से पूछा कि तक्षक अभी तक क्यों नहीं आया ? ऋषियों ने कहा कि वह इन्द्र के सिंहासन से लिपटा हुआ है। जन्मेजय ने कहा इन्द्रासन सहित यज्ञ की आहुति दो।

जब इन्द्रासन सहित इन्द्र जन्मेजय के कोप से अग्नि में गिरने लगा, तभी व्यास ऋषि और जैमिनी ने अपने मन्त्रों के प्रभाव से उन्हें रोका और जन्मेजय को बहुत समझाया कि जीवों का इतना संहार उचित नहीं है। तुम्हारे पिता ने ऋषि का अपमान किया था। अतः उन्हें दण्ड तो मिलना ही था। उनकी मृत्यु काल के प्रभाव से हुई है। तक्षक का इसमें कोई दोष नहीं था और फिर उन्होंने जन्मेजय को महाराजा अग्रसेन का उपाख्यान सुनाया, जिसने जीवों की रक्षा के हित में अपना वर्ण त्याग दिया। वह क्षत्रिय से वैश्य हो गये····उन्होंने अठारह यज्ञ किये। इन यज्ञों में होने वाली जीव हिंसा, पशु बलि का निषेध किया और अन्तिम यज्ञ बिना पशु-बध के किया। ब्राह्मणों ने कुपित होकर उनका वर्ण क्षत्रिय से वैश्य कर दिया, पर उन्होंने अपना निर्णय नहीं बदला।

वह वैश्य वर्ण के होकर भी क्षत्रियोचित कार्य करते रहे। युद्ध के साथ अहिंसा उनके लोकतन्त्र का शासनाधार बनीं।

इसकी कथा जय भारत से ली गई है, जो महाभारत के बाद का प्रकरण है। 'महाभारत का पहले नाम 'जय भारत' था। यह सवा लाख श्लोकों का एक ग्रन्थ था, पर इसके सम्पूर्ण श्लोक बहुत ढूँढ़ने पर भी नहीं मिले।

उपर्युक्त अग्रसेन उपाख्यान १४०० श्लोकों का एक ग्रंथ हैं, जिसकी कथा बहुत कुछ अग्रवंश वैश्यानुकीर्तनम से मिलती है।

—'अग्रोहा धाम" से

'अग्रसेन उपाख्यानुसार' अग्रसेन प्रताप नगर के राजा बल्लभ के यहाँ उत्पन्न हुये थे। प्रताप नगर दस गाँवों वाला एक छोटा राज्य था। जहाँ हरियाणा की तीन नदियाँ मिलती हैं। वहाँ नदी के दूसरे पार तो अग्रोदक नगरी का अरण्य था जहाँ अग्रसेन द्वारा अपनी नई राजधानी बसाने का प्रसंग है तथा नदी के इस पार वह राज्य बसा था।

अग्रसेन के चाचा कुन्दसैन ने प्रताप नगर पर अधिकार कर लिया था, अतः प्रताप नगर का नाम मिट गया।

कुन्दसेन ने राज्य से अग्रसेन को निष्कासित कर दिया। बाद में अग्रसेन ने इसे जीत कर 'अग्रोहा' को अपने राज्य का शासन का केन्द्र बना लिया था।

अग्रसेन के निष्कासन से विजित करने तक का वर्णन उपन्यास में अत्यन्त रोचकता से अंकित किया गया है।

उपरोक्त समस्त आधार पर इस उपन्यास का सृजन हुआ है।

अग्रसेन के विवाह माधवी और सुन्दरावती के साथ हुए थे। दोनों के अतिरिक्त उन्होंने अन्य सोलह विवाह भी किये थे, जिनका उद्देश्य विभिन्न शक्तिशाली राज्यों से सम्बन्ध स्थापित करना था।

महाराजा अग्रसेन की रानियों के नाम इस प्रकार हैं :—

माधवी, मित्रा, चित्रा, शुभा, शीला, शिखा, शान्ता, चरा, रजा, शची, सखी, शिरा, रम्भा, सुरसा, भवानी, समा, सुन्दरावती।

माधवी उनकी पटरानी थी। हरेक के तीन-तीन पुत्र हुए थे। जिनके नाम इस प्रकार हैं :—

विभु, विरोचन, पावक, वाणी, अनिल, केशव, रक्त, विशाल, धामा, धन्वी, पामा, पयोनिधि, पवन, माली, कुमार, मन्दीकन, कुश, कुण्डल, विकास-कुश, विरण, विनोद, वपुन, वली, हर, वीर, दती, रव, वाडिम दत्त, सुन्दर, कर, खर, गर, शुभ, पलश, अनित, धर, प्रखर, नन्द, कुन्द, मल्ली नाथ, कुलुम्बक, शान्ति, कान्ति, पस्यमाली, क्षमा शाली, पस्यपाली, विलाशद एवं अन्य भी दो राजकुमार।

महाराजा अग्रसेन की पुत्रियाँ इस प्रकार थीं :—

दया, शान्ति, कान्ति, कला, तितिक्षा, अमला, अधरा, मही, शिवा, रामा, रमा, जलदा, यामिनी, अमृता, शिवा, अर्जिका।

सब सन्तानें यज्ञों द्वारा उत्पन्न हुई। सभी धनवान, सम्पत्तिवान, गुणी, प्रतिभाशाली थे। सब सन्तानों का धरती पर देवता समान अस्तित्व था।

इन सन्तानों के भी प्रत्येक के तीन-तीन पुत्र, पौत्र तथा प्रपौत्रों ने जन्म लिया।

उपरोक्त सभी सहित अग्रसेन ने कलि के एक सौ आठ साल व्यतीत होने तक राज्य का सुख प्राप्त किया।

महाराज अग्र के बड़े सुपुत्र विभु ने अग्र के पश्चात् राज्य-भार सम्भाला। सौ वर्ष उपरांत अपने पुत्र नेमिरथ को राज्य सम्भलवा कर विभु दिवंगत हुए। नेमिरथ ने भी सपत्नीक राज - सुख भोग कर स्वर्ग का वास किया।

तत्पश्चात् विमल और सुखदेव ने फिर उसके सुपुत्र 'धनंजय' ने शासन किया।

तत्पश्चात् श्रीनाथ' आये। उन्होंने सुपुत्र 'दिवाकर' को जन्म दिया।

दिवाकर ने जैन धर्म स्वीकारा। पर्वत - शिखर पर रह कर दिवाकर जैन मत का पालन करते रहे।

फिर सुदर्शन राजा बने जिन्होंने अपने सुपुत्र का राज्याभिषेक कर वाराणसी गमन कर, सन्यास ग्रहण करने के पश्चात् परलोक गमन किया।

श्रीनाथ जी के महादेव, उनके यमाधर, उनके शुभांग, तत्पश्चात् मलय एवं 'वसु' जन्मे।

'वसु' के यहाँ 'दाशीदश' इत्यादि पुत्रों ने जन्म लिया, जिनकी आठ शाखाएँ हो गईं।

'मलय' के पश्चात् 'नदी', तत्पश्चात् 'विरागी' एवं 'चन्द्रशेखर' ने जन्म लिया। पश्चात् चन्द्रशेखर के 'अग्रचन्द' जन्मे। इन्होंने कलि-काल में शासन किया।

महाराजा - अग्रसेन की वंशावली

वैशाल की आठ पुत्रियाँ, धनपाल के आठ पुत्रों की धर्म पत्नियाँ हुई, जो अग्रवालों की आठ माताएँ मान्य हुई।

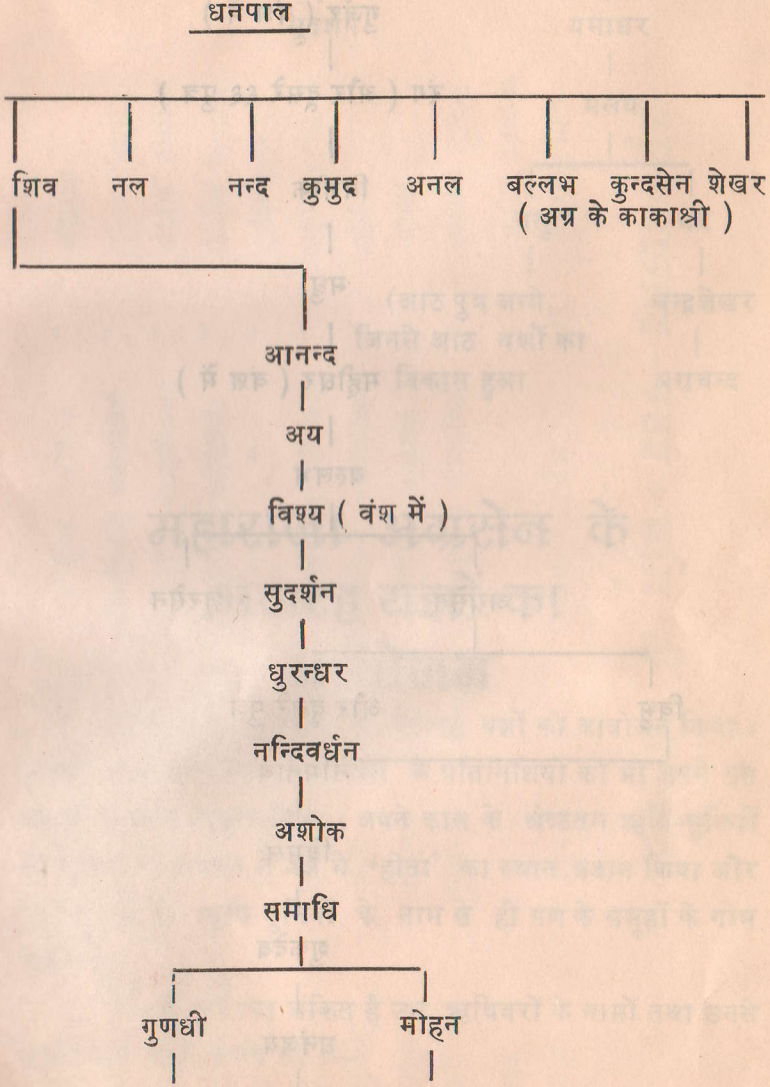

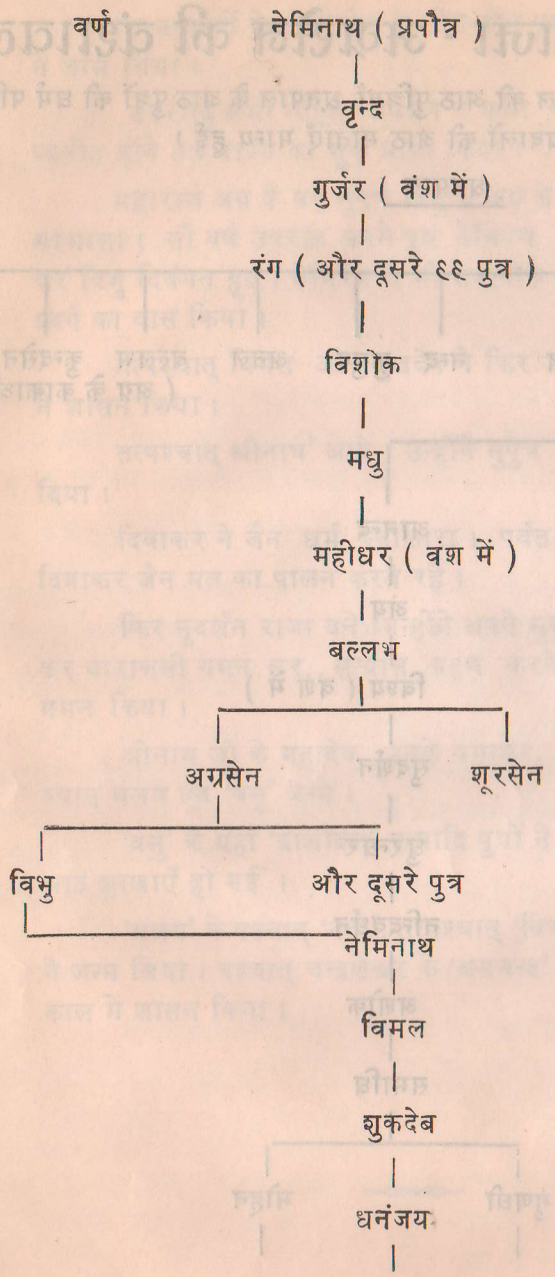

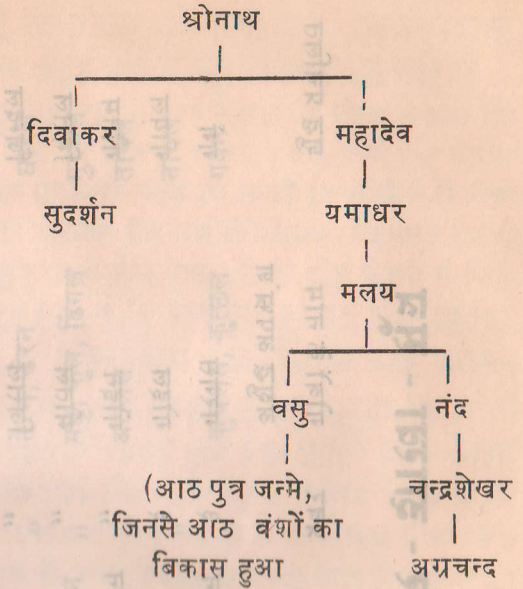

महाराजा अग्रसेन के अठारह यज्ञों का आयोजन

महाराजा अग्रसेन ने अठारह यज्ञों का आयोजन किया। उन्होंने अपने जनपद के १८ गणों के प्रतिनिधियों को भी अपने इस यज्ञ में यजमान नियुक्त किया। अपने काल के श्रेष्ठतम ऋषि-मुनियों को महाराजा अग्रसेन ने यज्ञ में 'होता' का स्थान प्रदान किया और घोषणा की कि ऋषि-मुनियों के नाम से ही गण के समूहों के गोत्र चलेंगे।

आगे तालिका अंकित है उन ऋषिवरों के नामों तथा उनसे चलने वाले गोत्रों आदि की :—

अग्रवालों के गोत्र - प्रवर - शाखा - सूत्र

	ऋषि नाम	गोत्र	वेद	शाखा	सूत्र	प्रवर	गोत्रों के नाम अशुद्ध अपभ्रंश	शुद्ध प्रचलित
१	गर्ग	गर्ग	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन	३	गरगस	गर्ग
२	गोभिल	गोयिल	,,	,,	गोभिल	३	गोइल	गोयल
३	गौतम	गौन	,,	,,	कात्यायन	,,	गोइन	गौतम
४	मैत्रेय	मित्तल	,,	,,	,,	,,	मीतल	मित्तल
५	जैमिनी	जित्तल	,,	,,	,,	,,	जित्तल	जिन्दल
६	शैंगल (शाडिल्य)	सिंगल	सामवेद	कोथुमी	गोभिल	,,	सिंहल	सिंघल
७	वात्स्य	वाँसल	,,	,,	,,	,,	वाँसल, वात्सल्य	बंसल
८	उरू (और्व)	ऐरन	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन	,,		एरन
९	कौशिक	कंसल	,,	,,	,,	,,	काँसिल	कंसल
१०	कश्यप	कुफ्फल	सामवेद	कौथुमी	गोभिग	,,	कच्छल	काश्यप
११	तांड्य	तिंगल	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन	,,	बुंगल, तिंगल	तित्तल
१२	मांड्य	मंगल	ऋवेद	शाकल	आश्वलायन	,,	मांगल	मंगल
१३	वशिष्ठ	बिंदल	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन	,,	भिंदल, बिन्दलस	बिन्दल
१४	धौम्य	धारण	,,	,,	,,	,,	टेरन, ढेरन	धारण
१५	मौदगल्य	मुदगल	ऋग्वेद	शाकल	आश्वलायन	,,	मधु, कुल, ढिंगल	मुदगल
१६	तैत्तिरि	तायल	यजुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन	,,	अतलस	तायल
१७	नागेन्द्र	नाँगल	सामवेद	कौथुमी	गोभिल	,,		नागल
१८	कुत्स	कुचलस	,,	,,	,,	,,	कुचलस, कुत्छल	गवन

महाराजा अग्रसेन के पुत्रों के विवाह :

महाराज ने क्षत्रिय कुल में जन्म लिया था। परन्तु इस समय यज्ञ सम्पन्न करने के पश्चात् वैश्य हो गये थे। उनके पुत्रों का विवाह क्षत्रिय कुल में न होकर समान कुल में भी नहीं होने चाहिए—यह ऋषियों ने निश्चित किया था तथा बतलाया था कि उनके पुत्रों का ब्याह नागराज बासुकि के वंश की अठारह नाग कन्याओं के साथ करने से वंश में वृद्धि होगी, अतः उनके अठारह पुत्रों का ब्याह अठारह पुत्रों का ब्याह अठारह नाग कन्याओं के साथ सम्पन्न हो गया।

नाग कन्याओं की प्रवृत्ति :

दिन में तो नाग कन्यायें मानवी बनी रहतीं; परन्तु रात्रि में सर्पाकार बन जातीं थीं। यह देखकर अग्रसेन दुःखी हुए। उन्होंने अपनी बहिन कौमुदी के पुत्र जसराज (अपने भाँजे) से यह बतलाया। जसराज ने अही नगर में जाकर पता लगाया।

उन्हें ज्ञात हुआ कि श्रावण मास में नाग-पंचमी के दिन पुत्र बधू अपने चोले उतार कर बाँवी-पूजन को जाती हैं। उस समय कोई उनके चोलों को लेकर भस्म हो जाय तो फिर वे सर्पाकार रूप में नहीं आ सकतीं। जसराज उनके चोलों को लेकर स्वयं ही भस्म हो गये।

तालाब से लौट कर जब नाग - कन्याओं ने अपने चोले नहीं पाये तो वे श्राप देने को तत्पर हुईं, पर अग्रसेन ने उन्हें यह कहकर शान्त कर दिया कि हमारे वंशज सदैव तुम्हारे चोलों को नाग स्वरूप की स्मृति रखेंगे। यही कारण है कि विवाह में सिरगुन्थ के वक्त कन्या का जूड़ा नाग फणाकार बाँधना तथा नाग फणाकार जूड़े (विवाह के समय सिरगुँथी की एक रस्म) को कन्या को पहनाया जाता है। इसमें कैंची प्रयोग नहीं की जाती और तब अग्रवालों में कन्यादान करने का रिवाज है।

विवाह के समय आज भी जसराज की यादगार में यह चोला लड़की के मामा के घर से आता है। तबही से श्रावण में नाग देवता को बाँबी-पूजन का रिवाज है। नाग-देवता को अग्रवाल लोग अपना 'मामा' मानते हैं।

इस चोले-परिवर्तन के बाद ही नाग कन्याएँ गर्भवती हुईं और उनके सन्तानोत्पत्ति हुई।

अग्रोहा से सम्बन्धित लोक कथाएँ

सेठ हरभजन शाह

किंवदन्ती है कि एक बड़े साहूकार व्यापारी श्रीचन्द ने अपने कारिन्दों को ११ सौ ऊँट केशर बेचने को दी तथा उन्हें ताकीद की कि किसी एक व्यापारी को ही पूरी केशर बेचना।

कारिन्दे केशर बेचते-बेचते 'महम' जा पहुँचे जहाँ, वहाँ का करोड़पति सेठ हरभजन शाह अपने निवास के लिये एक विशाल हवेली का निर्माण करा रहा था। जब सेठ को ज्ञात हुआ कि ११ सौ ऊँट केशर एक ही व्यापारी को बिकने आई है और कोई व्यापारी उसे खरीद नहीं पाया है, तो उसने सब केशर खरीद ली और कहा कि इससे हवेली की रंगाई हो जायेगी।

कारिन्दे केशर बेचकर जब श्रीचन्द के पास गये तो कारिन्दों ने उसे सब हाल बतलाया।

श्रीचन्द ने सेठ हरभजन शाह को इस प्रकार का पत्र लिखा कि जब तक तुम्हारी पितृ भूमि 'अग्रोहा' वीरान पड़ी हुई है, तब तक तुम्हारा हवेली में रहना और तुम्हारा धन-वैभव बेकार है।

पत्र पढ़कर सेठ हरभजन तिलमिला गया। उसने अपनी मूँछें कटवा कर, पगड़ी उतार कर प्रण किया कि जब तक अग्रोहा नहीं बसेगा, तब तक न वह पगड़ी पहनेगा और न मूँछें रखेगा।

सेठ हरभजन शाह ने अग्रोहा के अन्तर पर दुकान खोली और यह मुनादी करवा दी कि जो भी व्यक्ति अग्रोहा में आकर बसेगा, वह धन या माल उधार लेकर इस जन्म में या अगले जन्म में कर्ज चुकाने की लिखा-पढ़ी करके रकम या माल ले सकता है।

राजा रिसाल ने हरभजन शाह की रक्षा के लिए थोड़ी दूर पर फौज का इन्तजाम कर दिया, जिससे वहाँ बसने वालों और हर-भजन का कोई अहित नहीं कर पाये। जब अन्य अग्रवालों ने सेठ की मुनादी सुनी तो वे वहाँ आकर रहने लगे। इस तरह अग्रोहा में बसावट हो गई।

लक्खी तालाब

अग्रोहा में इस तालाब का उल्लेख आता है जो कभी मीलों के अन्तर पर फैला था। इस सम्बन्ध में लोक-गाथा प्रचलित है।

लक्खीसिंह नाम के एक बंजारे ने हरभजन शाह से दूसरे जन्म में चुकाने की शर्त पर एक लाख रुपये ले लिये। हरभजन शाह ने परलोक वाली बही निकाल कर बन्जारे का अँगूठा लगवा लिया।

बंजारा सेठ को मूर्ख समझकर रुपये लेकर चलने लगा और कहने लगा कि परलोक किसने देखा है, तभी उसके मन में आया कि पिछले जन्म के पापों के कारण वह बंजारा बना है, अगर अगले जन्म में वह हरभजन के रुपये न चुका पाया तो न जाने किस यौनि में पड़ेगा। हो सकता है उसे बैल बनकर सेठ के कोल्हू में जुतना पड़े। यह विचार कर वह सेठ को रुपये वापिस करने जा पहुँचा, पर परलोक में चुकाने की शर्त पर उधार लिये गये रुपये सेठ ने वापिस नहीं लिए।

बंजारा लौट तो आया, पर मन में यही बेचैनी थी कि सेठ उससे रुपये बापिस ले ले। उसे स्वयं से घृणा हो गई। तभी वन में उसे एक योगीराज मिल गये उन्होंने दया करके उसे मार्ग-दर्शन दिया कि इन रुपयों से तू अग्रोहा में एक तालाब का निर्माण कराकर उसमें निर्मल जल भरवा दे। आगे का कार्यक्रम उसे चुपचाप समझा दिया।

बंजारे ने अग्रोहा के निकट ही तालाब बनवा कर उसमें निर्मल जल भरवा दिया। जो भी तालाब से पानी भरने आता, योगीगाज के निर्देशानुसार बंजारा उससे कह देता कि यह तालाब सेठ हरभजन शाह का निजी तालाब है। इसमें से कोई पानी नहीं भर सकता।

प्यासी जनता सेठ की निन्दा करती हुई सेठ के पास पहुँची कि ऐसा निजी तालाब बनवाने से क्या लाभ ?

अपनी निन्दा सेठ को पसन्द नहीं थी। उसने बंजारे की चतुराई समझकर उससे परलोक की उधारी पर लिया गया रुपया वापिस ले लिया। बंजारा प्रसन्न होता हुआ लौट गया।

तभी से यह तालब लक्खी तालाब के नाम से प्रचलित है।

किवदन्ती है कि पहले लक्खी तालाब कई योजन लम्बा-चौड़ा होकर १५० एकड़ में इसका फैलाव था। इसके अवशेष अब भी अग्रोहा में विद्यमान है। जिसके जल में स्नान करने से अनेक रोग ठीक हो जाते थे।

कहते हैं कि एक ग्वाला इसी तालाब में पानी पिलाने के लिए गायों की बछड़ियों को ले आया। तभी दूसरी ओर से गायें आ गईं। तालाब में अपनी बछड़ियों को देखकर गायें भी तालाब में कूद पड़ीं। पानी की गहराई में गाय और बछड़ियाँ-सब-डूब गए।

तब ही ग्रामवासियों ने इस तालाब की लम्बाई कम करने के लिए इसे मिट्टी से पटवा दिया था।

शीला माता

इस तालाब के पास ही सतियों की मढ़ियाँ और वहों पर थेह के पार पर तकरीबन तीन सौ, सवा तीन सौ कदम के अन्तर पर शीला माता का मन्दिर या मढ़ी है।

किवदन्ती है कि विवाह के योग्य होने पर सेठ हरभजन शाह ने अपनी पुत्री शीला का विवाह राजा रिसालू के दीवान मेहता शाह के साथ कर दिया।

जब शीला के रूप-सौंदर्य का बखान रिसालू ने सुना तो उसे पाने के लिए उसका मन मचल उठा।

उसने चाल चलकर मेहता शाह को रोहतासगढ़ पठा दिया और उसकी अनुपस्थिति में वह शीला पर डोरे डालने लगा, परन्तु शीला ने उसकी एक भी नहीं सुनी। शीला को बदनाम करने के लिए उसने अपने नाम की अँगूठी शीला के शयनागार में दासी द्वारा रखवा दी।

रोहताशगढ़ से लौटकर जब मेहता शाह ने शयनागार में रिसाल की अँगूठी देखी तो वह शीला पर सन्देह कर उठा और उसने शीला को त्याग दिया।

इस दुःख से पीड़ित होकर वह विक्षिप्त सी होकर अपने पिता के यहाँ जा पहुंची।

इधर दासी ने मेहता शाह को स्पष्ट बता दिया कि शीला निर्दोष है, वह रिसालू की चाल थी।

अब मेहता शीला की खोज में बन-बन डोलने लगा। वह शीला-शीला रटते-रटते पागल-सा हो गया और शीला-शीला पुकारते वह अग्रोहा जा पहुंचा। जब हरभजन शाह की दासी ने मेहता से पूछ-ताछ की तो उसको सूचना उसने शीला को दी। वह पति-दर्शन को नंगे पैर घर से दौड़ पड़ी, परन्तु जब वह वहाँ पहुंची तो मेहता ने प्राण त्याग दिये थे। शीला ने भी पति के शरीर पर गिरकर अपने प्राणों का त्याग कर दिया। पति - पत्नी दोनों की कथा सदा के लिए अमर हो गई।

राजा रिसालू भी मेहता की खोज में अग्रोहा पहुंचा और दोनों की मृत्यु सुनकर अपना स्यालकोट का राज्य बेटे को देकर वह मृत्यु - लोक को प्राप्त हो गया।

जिस जगह रिसालू रुका था, उस जगह पर आज भी रिसालू टीब्बे के नाम से अवशेष सुलभ हैं।

शीला तथा मेहता शाह की स्मृति में अग्रोहा में मन्दिर बना है, जहाँ शीला माता के दर्शनार्थ श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है। हर भादों मास की अमावस्या को यहाँ पर मेला लगता है। अग्रवाल बन्धु वहाँ आकर मनौती मानते हैं। बच्चों का मुण्डन आदि करवाते हैं।

धुँगनाथ बाबा की गाथा

किवदन्ती के अनुसार एक धुँगनाथ नाम के बाबा अपसे शिष्य कीर्तिनाथ के साथ अगोहा में पधारे और समाधि लगाने से पूर्व कहने लगे कि जब तक मैं समाधि में रहूं, तब तक इस नगर में भिक्षा माँग अपनी उदर-पूर्ति करना और मेरी धूनी को प्रज्वलित करते रहना और उन्होंने समाधि लगा ली।

कीर्तिनाथ को दुर्भाग्य से भिक्षा न मिली और उसे भूखा सोना पड़ा। दूसरे दिन वह भिक्षा को फिर निकला, परन्तु तब भी उसे भिक्षा नहीं मिली। केवल एक कुम्हारिन ने भिक्षा दे दी।

उसी कुम्हारिन से एक कुल्हाड़ी और रस्सी मांगकर कीर्तिनाथ जंगल से लकड़ी काट लाया। आधी लकड़ी वह गुरुजी को धूनी में डालता और आधी बेचकर अपनी उदर पूर्ति करता। इस प्रकार उसे कई दिन छै महीने व्यतीत हो गये।

जब धुँगनाथ ने समाधि खोली तो शिष्य ने नगर से भिक्षा न मिलने तथा कुम्हारिन से रस्सी, कुल्हाड़ी माँग कर लकड़ी काटने और बेचने तक का पूरा हाल उनको बतला दिया।

धुँगनाथ ने क्रोध में भर कहा कि कुम्हारिन से सपरिवार अग्रोहा से बाहर निकल जाने को कह कर पूरे नगर में घोषणा करवा दी कि कल सवा पहर अग्रोहा में आग लगेगी। जिसको भी निकलना हो निकल जाये वरना यहाँ रहने पर वह अग्नि में भस्म हो जायेगा।

कुम्हारिन ने तो वहाँ से तीन मील दूर जाकर अपना डेरा लगा लिया। जो अन्य लोग भी उसके साथ चले गये। वे भी बच गये परन्तु जो लोग वहाँ रह गये, दूसरे दिन सवा पहर अग्रोहा में अग्नि-काण्ड हुआ और अग्रोहा सहित सब भस्म हो गये।

कुम्हरिया ने जहाँ अपना डेरा लगाया था, उस स्थान पर कुम्हरिया चक आज भी है।

कहते हैं अग्रोहा की उसी राख की ढेर आज थेह रूप में है। थेह के नीचे की ओर मकान इत्यादि स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। खुदाई करने पर राख दिखाई पड़ती है।

आगे इस उपन्यास का हिन्दी में सारांश प्रस्तुत है—

प्रताप नगर के राजा धनपाल की छठवीं पीढी में राजा बल्लभ हुए। वे बहुत ही कुशल शासक और धर्मानुयायी प्रजा पालक राजा थे। खजूर के वृक्ष जैसा लम्बा गात, गौर वर्णीय, बलशाली राजा बल्लभ अपने राज्य की कुशलता जानने के लिए वेश बदल कर राज-धानी में अकेले निकलते थे।

एक दिन नगर का चक्कर लगाते हुए वे बन खण्ड में निकल गये, जहाँ हाथी के एक शक्तिशाली बच्चे ने उन पर आक्रमण कर दिया। राजा ने उसे अपने सिर से ऊपर उठा कर, घुमाकर खिलौने की भाँति

दूर फेंक दिया, जहाँ एक सिंह ने उसे दबोच लिया। राजा ने सिंह का जबड़ा चीरकर सिंह को मारकर उस हाथी के बच्चे की रक्षा की। उसे अपने हाथी शाला में ले आये।

(बाद द्वापर के, कलि के आरम्भ में) राजा बल्लभ के यहां एक सुन्दर, सलोना, बालक उत्पन्न हुआ। बालक के जन्मोत्सव की खुशी में राज्य के घर - घर में प्रसन्नता का पारावार उमड़ने लगा। मिष्ठान्न, फल वितरित किये गये। ब्राह्मणों को भोजन कराये गये। सम्पूर्ण राजधानी दुल्हिन की भाँति सजाई गई।

अनेक दिनों तक चलने वाले हर्षोल्लास के बारहवें दिन, इस सुन्दर बालक का नामकरण संस्कार हुआ। नाम 'अग्र' रखा गया। ब्राह्मणों ने राज-पुत्र को चक्रवर्ती होने का आशीष प्रदान किया।

पुत्रोत्सव की प्रसन्नता में बल्लभ ने मथुरा के अन्तर पर यमुना कूल पर एक नव नगर की स्थापना की, जिसका नाम पुत्र के नाम पर अग्रपुर (बिगड़ते-बिगड़ते' आगरा' हुआ) रखा।

राजकुमार अग्र का लालन-पालन अत्यन्त लाढ़ चाव से हुआ। वे अत्यन्त प्रतिभाशाली हुए।

बड़े होते ही उनकी शिक्षा - दीक्षा का राज्य में प्रबन्ध हुआ। प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अनुसार उन्हें दीक्षा दिलाकर शिक्षा ग्रहण कराई गई। उन्हें वेद, शास्त्र, राजनीति, अर्थनीति एवं अस्त्र-शस्त्र की व्यावहारिक शिक्षा प्रदान की गई।

जब राजकुमार 'अग्र' समस्त विधाओं में पारंगत हो गये और शासन के योग्य समझे जाने लगे तो पैंतीस वर्ष की उम्र में प्रजा की राय जानकर, राजा बल्लभ ने शुभ मुहूर्त में उनका राज - तिलक कर दिया और स्वयं बीहड़ वन में तप करने चले गये।

अग्र की बीरता और शौर्य की चर्चाएँ चहुं-दिश फैली थीं।

जब नाग-लोक में नागों के राजा कुमुद ने महाराज 'अग्र' के शौर्य की गाथाएँ सुनीं तो, वह अपनी कन्या 'माधवी' को लेकर भू-मण्डल पर आ गया। कन्या की सुन्दरता को देखकर इन्द्र उस पर मोहित हो गया। कुमुद से अपनी इच्छा प्रकट कर दी, किन्तु कुमुद

नहीं माना, उसने माधवी का विवाह महाराजा अग्र से कर दिया।

इस विवाह के कारण इन्द्र ने 'अग्र' से वैमनस्यता करली। इन्द्र ने 'अग्र' को युद्ध हेतु ललकारा। अग्र अस्त्र - शस्त्र लेकर इन्द्र से युद्ध करने मैदान में उतर आये, परन्तु ब्रह्मा ने मध्यस्थता करके दोनों में सन्धि करवा दी। परन्तु मन ही मन इन्द्र अग्र से जलन रखने लगा।

इन्द्र को वशीभूत करने हेतु राजा अग्र ने हरिद्वार के वनों में प्रस्थान कर महालक्ष्मी की उपासना लम्बे समय तक की। महा-लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर राजा को उसके राज्य में रहने का वरदान देकर उन्हें कोल्हापुर जाकर नागराज के अवतार राजा महीधर के स्वयंवर में जाकर उसकी कन्याओं को विवाह कर लाने का आदेश दिया।

राजा कोल्हापुर पहुँचे। वहाँ महीधर को कन्या सुन्दरावती को स्वयंवर में जीत लाये।

जब राजा बल्लभ का स्वर्गवास हुआ तो महाराज अग्र उनका पिण्ड दान करने पंडितों के परामर्श पर लोहागढ़ (पंजाब में एक स्थान) गये। उनके पिण्ड - दान से राजा बल्लभ को मुक्ति - दान मिला।

जब राजा अग्र पिण्डदान करके हाथी की सवारी पर बैठे अपने मन्त्रियों, सैनिकों और धर्माचार्यों सहित लोहागढ़ से लौट रहे थे, तो मार्ग में एक बीहड़ बन पड़ा, जहाँ एक सिंहनी प्रसव कर रही थी। प्रसवते ही सिंहनी के बच्चे ने अग्र के हाथी पर उछाल लगा कर असफल प्रहार किया। राजा को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह स्थान इतना वीर प्रसूता है कि जन्मते ही सिंहनी के बच्चे ने उछल कर उनके हाथी पर प्रहार कर दिया। अतः राजा अग्र ने ऐसी वीर प्रसूता भूमि को ही अपनी नई राजधानी बनाया जिसका नाम ओग्रदक (अग्रोहा) हुआ। अपनी पुरानी राजधानी का प्रबन्ध कार्य अपने अनुज सूरसेन को सौंपकर राजा अग्र नवीन राजधानी से ही राज्य-संचालन करने लगे।

लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर 'अग्र' ने अठारह यज्ञों का आयोजन किया। सम्पूर्ण राज्य की भागीदारी हेतु अपने जन-पद के अठारह गणों के प्रतिनिधियों को भी यज्ञ में यजमान बनाया।

प्रत्येक यज्ञ में होता का स्थान प्राचीन काल के ऋषि-मुनियों को प्रदान किया और घोषणा की कि आगे से इन ऋषि-मुनियों के नाम के गण के समूहों का गोत्र चलेगा तथा यही अठारह गण ही अग्रोदक (अग्रोहा) गणराज्य की शक्ति के एकमात्र स्तम्भ बनेंगे।

महाराज यज्ञ के स्वयं अधिष्ठाता रहे, जिसमें गर्ग मुनि ने ब्रह्मा का आसन ग्रहण किया। यज्ञ में गर्ग मुनि द्वारा ब्रह्मा का आसन ग्रहण करने के कारण महाराज अग्रसेन का गोत्र गर्ग हुआ।

इस प्रकार सत्रह यज्ञ तो पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न हो गये, किन्तु अठारहवें यज्ञ में अग्रसेन ने पशुबलि देने से इन्कार कर दिया।

तब ही अग्रसेन को ऐसा लगा कि स्वयं परशुराम के स्वर में कोई उनसे आकाश-वाणी द्वारा कह रहा हो कि हे अग्र। तूने अपने यज्ञ में पशु-बलि देने में असमर्थता प्रकट की है। अतः क्षत्रिय वर्ण त्याग कर तू वैश्य वर्ण अपना ले। ब्राह्मणों ने उनको क्षत्रिय वंश से वैश्य वंश में भेज दिया।

महाराजा अग्रसेन के राज्य में कोई नया व्यक्ति आकर बसता था, तो उसे प्रत्येक घर से एक रुपया और एक ईंट प्राप्त हो जाते थे और एक लाख घरों से आगन्तुक को आवास बनाने हेतु एक लाख ईंटें और व्यवसाय हेतु एक लाख रुपयों का मिलना बहुत बड़ी उपलब्धि होती है।

राजा अग्रसेन ने एक ईंट और एक रुपया जैसी पद्धति द्वारा परस्पर सहयोग की भावना को विकसित किया। राजतन्त्री शासन प्रचलित होते हुए भी, अपने राज्य में लोकतन्त्र और पंचायती राज्य की नींव डाल दी। उन्होंने वैश्यों को शस्त्र विद्या सिखला कर पारंगत किया। मल्ल-युद्ध करना सिखलाया। उन्हें वैश्य होते हुए भी 'महाराजा' की पदवी द्वारा अलंकृत किया गया।

महाराजा अग्रसेन ने कलियुग के १०८ वर्ष तक राज्य किया और अन्त में अपने पुत्र विभु को राजगद्दी पर आसीन कर वैशाख माह की पूर्णिमा को विरक्त हो गये।

—डा० श्याम सुन्दर सुमन

प्रताप नगर के राजा धनपाल की छठी पीढ़ी में राजा बल्लभ भये हे।

प्रताप नगर दस गामन कौ एक छोटौ-सौ राज हो, जो तीन नदीन के मिलबे बारे इस्थान सों उल्ली पार बसौ हो। बाके पल्ली पार पै घनौ बन हो।

राजा बल्लभ भौत ही कुसल सासक और धरमानुयाई हे। इनके राज में पिरजा भौत सुखी ही। धन-धान्य की कमी नॉय ही। पूरे राज में सुख-चैन हो। चोरी, राहजनी, नॉय ही। सिग दिसान में सुख-चैन बरसतौ हो।

तीन नदीन के मिलबे बारे इस्थान के पल्ली पार पै उत्तम गिरि-सिखर बिखरे हे, जिनपै भाँति-भाँति की बिरछाबली, लता और झार-झंकार उगे हे।

राज - प्रासाद के बाहर आम, पीपर, पलासू, बिल्व - पत्तर के बिरच्छ, कदम, चन्दन लहराते हे, कहूँ आबरौ, बबूर, नीम, सीसम लहराते हे, तौ तरहटी में कहूँ खजूर, कचनार, बड़कुन्द और इमली के बिसाल बिरच्छ अपने बाहुल्य कौ परिचय देते हे।

बिरच्छन के मध्य में लता, गुल्मन के सघन-पुँज हे। बिरच्छन के नीचे घास की हरी ओढ़नी ओढ़े बसुधा, अलसाई ऑखिन सों निहारतो रहती ही।

समूचे बन्य-परदेश में हरियाली हहरती ही। राजा बल्लभ के राज में सीतलमन्द, सुगन्धित - वायु बिहरती ही। मधु - लोभी भँवरे आम के बौरन पै गुँजित रहते हे। सुन्दर पच्छी चहचहाते रहते। मोर, कोयल, तोता, नीलकण्ठ बिचरन करते हे। चिरैयान कौ हू बाहुल्य हौ। कहूँ-कहूँ मधु-मक्खी हू, अपने छत्तान पै बैठी, अपने मधु की रखवारी करती हू दीख परतीं हीं।

राजा के बन-खण्ड में साँय-साँय की ध्वनि करतौ भयौ पवन साँपन की तरियाँ फुँकारतौ हौ। बन के पसु, गिरि-कन्दरान में बिचरन करते रहते हे। सिह, रीछ, हाथी, बाघ, हिरन, मुक्त वातारन में स्वच्छन्द हैकै बिचरते हे।

बन में ही गिरतौ सीतल - जल सों झरतौ एक झरना प्रवाहित

हौ, जापै थके हारे राहगीर और बन के पसु, जल तौ पीते ही हे तथा इस्नान-ध्यान हू कर लेते हे। हाथी और सिह बिना दुराब के जल में स्नान कर लेते हे। हरिन बेखौफ हैकै बन में कुलाच भरते हे। झरना के एक कूल पै ही गौ और सिह जल पीबे में संकोच नॉय करते हे—जि राजा बल्लभ के राज-सीमा की सबसौ बरी बिसेसता ही।

खजूर - सौ लम्बौ इकहरे गात कौ, गोरौ, बलसाली राजा बल्लभ अपने राज की राजी - खुसी जानबे कूँ रात में भेस बदल कै, राजधानी में इकलौ निकरतौ हौ, और बन्द द्वारन के बाहर रुक-रुक कै, भीतर रहबे बारे, नर - नारीन की सुसर सुन कै अनुमान लगातौ रहतौ हो कि बाके राज की पिरजा कैसी है, बाके प्रति पिरजा के कैसे बिचार है और पिरजा में बाके काजैं स्वामी-भगती है कि नॉय ?

अपनी पिरजा की भलाई में ही राजा लगौ रहतौ हो।

जब सिसिर की ठिठरती, बरसाती रात में राजा बल्लभ इकले अपनी राजधानी कौ निरीच्छन कर रहे हे तौ बिनकी इच्छा राजधानी के बाह्य भाग में जाइवे की है गई। वे घूमत - घूमत बन - खण्ड की ओर निकर गए और बहते झरना के निकट झार-झंझारन में दुबक कै बैठ गए।

वे झरना के जल-तरंग के सुमधुर वाद्य कौ आनन्द लै रहे हे, तब ही एक सफेद हाथी आय कै जल सों किलोल करत - करत अधिक बौराय गयौ और बिरच्छ-बल्लरीन और झार - झंकारन कूँ अपनी सूँढ़ सों उखार - उखार कै फैंकवे लगौ। राजा बल्लभ कूँ अपने प्रान संकट में लगवे लगे। बिननै झार-झंकारन में ही हाथी की सूँड़ अपने दाहिने हाथ सों कस कै पकर लई।

हाथी बल लगाय कै अपनी सूँड कूं अपनी ओर खैंचवे लगौं, पर अपनी सूँड़ झार-झंकारन में सों नॉय निकार पायौ। चिंघार कै हाथी नै बन-खण्ड गुँजायमान कर दियौ।

हाथी की चिंघारन नै सुन कै बन-खण्ड के सब पसु-पच्छी और हाथी के परिवारीगन इकट्ठे हैकै बाकी सूँड़ झारी - झंकारन में सों

निकारबे के अनेक उपाय करबे लगे, पर वे बाकी सूँड़ नॉय निकार सके।

हाथी भौत अकलमन्द जानवर होय है। सब हाथीन नै सलाह कर लई और झंकारन में फँसो सूँड़ बारे हाथी को पूँछ, दूसरे हाथी ने अपनी सूँड़ में लिपेट लई और दूसरे हाथी की पूँछ, तीसरे हाथी ने अपनी सूँड़ में लपेट लई, जा तरियाँ एक के पीछे एक-एक करकै दस हाथी मिल कै पहले हाथी कूँ बल लगाय कै, चिंघार-चिंघार कै पीछे माँऊ खैंचबे लगे, पर बाकी सूँड़ कूं झारी - झंकारन में दुबके भये बल्लभ के हाथ सों नॉय निकार पाये।

बन-खण्ड में हाथीन के हो - हल्ला सों धरती, आसमान पै उठ गई।

राजा के सरीर सों पसीना चुचाय उठौ। अबेर तक हाथी की सूँड़ कूँ पकरे रखबौ असम्भव हौ, अतः राजा ने हाथी की सूँड़ कूँ बिसाल बिरच्छ के तने में लपेट कै, अमर बेल की रस्सीन सों बाकूँ कस कै बाँध दीयौ, चौकि आगे सों सूँड़ खैंची जाइबे पै और पीछे सों कैऊ-कैऊ हाथीन की सूँड़ द्वारा बाकी पूँछ खैंची जाइवे पै, हाथी चिंघार-चिंघार कै असुध, अधमरौ-सौ लगबे लगौ हो।

राजा घिसट-घिसट कै, लुक-छिप कै एक बिसाल बिरच्छ पै चढ़ गये, पर रस्सा - कसी के खेल की तरियाँ हाथी, पहले बारे हाथी कूँ पीछे खैंचिबे के प्रयास में चीखते - चिंघारते रहे।

अन्त में अमरबेल टूट कै नीचे जाय परी और पहले हाथी के संग ही, सब हाथी, एक - दूजे पै लुढ़क - लुढ़क कै, चीखते भये नीचे घाटी में जाय गिरे।

अब भोर है गयौ हो। कितनेन कूँ चोट - फेंट लगी, कितेक घायल भये, या बिनकौ का हाल भयौ—राजा बल्लभ बिरच्छ पै चढ़े भये ऊ-नॉय समझ सके।

कछू अबेर पीछै राजा नै घायल हाथीन कूँ भाजते भये देख लीयौ।

जानै कितते, तबई एक हाथी कौ बच्चा चिंघारतौ भयौ बन

में आय पहुँचौ और राजा कूँ बिरच्छ पै बैठौ देख कै, अपने पूरे बल सौं बिरच्छ कूँ नीचे गिराइबे की कोसिस में लग गयौ। बानैं बिरच्छ की टहनोन कूँ एक झपट्टा में ही तोर कै नीचे फैंक दीनौ। गुस्सा में मदमाते बच्चा नै बिरच्छ के तने कूँ सूँड़ पै लिपेट कै धारासायी कर दीयौ और राजा माँऊ प्रहार करबे कूँ भाजौ। बानै राजा के गरे में अपनी सूँड डार दीनीं और राजा की गरदन घोंटबे की कोसिस में अगारी बढ़ दीयौ।

बल्लभ पहलै ही समर चुके हे बिननै अपने दोनों हाथन ते हाथी के बच्चा की सूँड़ पकर कै, बाकूँ अपने सीस ते ऊपर उठाय कै, बाकूँ चारों दिसान में खिलौना की तरियाँ घुमाय दीयौ, फिर धरती पै पटक दीयौ।

चिंघारतौ भयौ अबई बच्चा धरा पै ते उठ हू नाँय पायो हो कि बन-खण्ड में सिंह की हुँकार गूँज उठी। सिंह की दहार ते हाथी कौ बच्चा कुलबुलाय उठौ और जा दिसा ते सिंह की हुँकार सुनाई दै रही ही, बित माँऊ म्हौ करकै, सतर हैकै बाते द्वन्द्व - जुद्ध कूँ उद्यत हैकै ठारौ है गयौ।

सिंह गर्जतौ भयौ हाथी के बच्चा पै खिबर परौ। दौनोंन में जुद्ध है उठौ।

सिंह ने बच्चा की सूँड पै धाबौ बोलौ। सिंह के पंजेन में ते सूँड़ बचाय कै बच्चा नै अपनी सूँड़ में सिंह के चारों पायन नै बाँध कै बाकूँ ऊपर उछार कै फैंक दीयौ।

अब सिंह फिर बच्चा माँऊ धाय कै हुँकारौ। बच्चा राजा बल्लभ की ओर निहार कै रच्छा के ताईं गुहार कर उठौ। राजा बाके सीस पै हाथ फेरबे लगे।

राजा कूँ सामीं ठारे देख कै सिंह बिनपै ही रूर परौ और राजा सिंह ते गुथवे लगे। कभू सिंह राजा के ऊपर तो कभू राजा सिंह पै।

अबेर तोलीं राजा और सिंह गुथते रहे। दौनोंई लहू - लुहान है गये।

जब राजा सिंह के पंजेन कूँ अपने पाँयन में दबाय कै, अपने दौनों हाथन ते सिंह के जबरा कूँ फारबे कौ प्रयास कर रये हे तौ, सिंह नै राजा के पाँयन में ते अपने पंजे निकार कै, अपने पिछल्ले पाँयन ते राजा की जाँघ घायल कर दीनी। राजा की जाँघन में ते फुब्बारेन की तरियाँ रुधिर बह उठौ।

हाथी कौ बच्चा जि सिंग देख रहौ हो और अब तोली स्वयं कूँ सिंह ते जुद्ध करबे कूँ तैयार कर चुकौ हो, बानै, सिंह के पिछल्ले दोनों पाँयन कूँ अपनी सूँड़ में बाँध कै सिंह कूँ पटक दीयौ।

राजा सिंह पै लद गये। बिननै दोनों हाथन ते बाकौ म्हौं चीर डारौ। कछू देर बिलबिलाय कै सिंह सान्त है गयौ।

सिंह की हुँकार और हाथी की चिंघारन कूँ सुन कै, राजा की परजा बन-खण्ड में आय चुकी ही और बड़ी अबेर ते राजा और सिंह कौ द्वन्द्व-जुद्ध ऊँचो चट्टान में ठारी निरख रही ही और जाते पहलै हाथीन नै घाटी में लुढ़कते हू बिलोक चुकी ही।

अपने राजा की बहादुरी देख कै, परजा राजा की जै- जैकार करती भई चट्टान पै ते नीचै, राजा के ढिग उतर आई और राजा के तन के रुधिर कूँ अपने लत्तान ते पोंछबे लगी।

परजा राजा के पाँयन में झुक कै पुनः जै-जै कार करबे लगी। राजा नै सब कूँ आसीस दीयौ।

हाथी कौ बच्चा पास के सरोवर सों कमल के द्वै फूल लै आयौ और बानें बे राजा के पाँयन पै सिरधा ते चढ़ाय दीने। राजा नै पुनः बाके सीस पै हाथ फेरौ। हाथी के बच्चा नै सूँड़ उठाय कै, चिंघार कै राजा कूँ पुनः नमस्कार कीयौ।

राज-महल ते अमात्य और सैनिक म्हाँ आय पहुँचे। राजा कूँ घायल देख कै अमात्य बोले, "महाराज ! आप कूँ बिसराम की आवस्यकता है। रथ आय गयौ है आप बामैं आसीन हैकै बेग महल में पधारौ। बैद्यराज हू म्हाँ आपके उपचार हेतु उपस्थित हुंगे।"

राजा मुस्काये, "अमात्य ! हम कुसल हैं। आप चिन्तित मत होइये।"

"राजन ! आप कूँ बिसराम चहिए।" अमात्य कहबे लगे, "बेग रथ में बिराजौ। आपकूँ इकलौ भेस बदल कै अब प्रासाद ते रियाया की देख-रेख के काजै हम बाहर नाँय जान देउ करिंगे।

राजा मुस्काय उठे. "जि आपकौ प्यार बोल रह्यौ है पर पहलै हमारे काजै परजा ही है। राज बाद की बात है।"

"पर राजन् !" अमात्य कछू कहनौ चाहते हे, पर राजा बीच में ही बोल परे, "अमात्य ! राजा बुई है, जु प्रजा की सेबा, दुःख-सुख में संलग्न रहै। प्रजा ते ई राजा है और राजा ते राज ! जा तरिया राजा और राज-दोनों तब ही सफल माने जानिंगे, जबकि परजा के दोनों ई सेवक बन कै रहें।"

राजा के बचन सुन कै अमात्य गद्-गद् है गये। वे राजा बल्लभ के चरनन कूँ परस कै कहवे लगे, "राजन् ! राजा होय तौ आप जैसौ जब राजा परजा कूँ प्रानन ते अधिक चाहबैगौ तौ प्रजा हू ऐसे राजा पै तन-मन-धन बारिबे कूँ सदा तैयार रेहगी····बोलौ, राजा बल्लभ की जै होय।'

इकट्ठौ भयौ समुदाय राजा की जै-जै कार करबे लगौ। हाथी कौ बच्चा हू चिंघार कै, सूँड़ उठाय कै राजा कूँ परनाम करबे लगौ।

राजा सीस हलाय कै अस्वीकृत - सूचक शब्दन में कह उठे, "राजा की नाँय, बोलौ, पिरजा की जै होय॥"

अबकी बेर जन-समुदाय राजा के सुर में बोल उठौ, "पिरजा की जै होय·· पिरजा के राजा की जै होय····राजा पिरजा दोनोंन की जै होय।

हाथी कौ बच्चा हू चिंघार कै सूँड़ उठायबे लगौ।

"अब तौ आप रथ में बिराजैं महाराज" पिरजा में सौं एक जन नै अनुरोध कीयौ।

"नाँय ! हम जा समै राजा नाँय। जा समै हम, पिरजा के सेवक हैं। जब सिंहासन पै बैठ जाइंगे, तब राजा हुंगे····हम भेस बदल कै पिरजा कौ दुःख-सुख जानबे पैदर निकरे हैं·····अब पैदर ही राज-भवन तक जाइंगे।"

"पर महाराज····" अमात्य कछू कहनौ चाहते हे, पर राजा बोल परे, "हमें सूसर लगी ही कि एक सिंह भोर होते ही बन - खण्ड में आय कै पिरजा के ढोर - जिनावरन कूँ उठाय लै जाय है। हम बहुत दिनान सौं जा खोज में हे। आज बु सिंह मारौ गयौ···· अब पिरजा के ढोर, जिनाबर हू आज सों सुरच्छित रहिंगे।"

तबई पिरजा राजा की जै-जै कार करबे लगी। राजा नार हलाय कै बोले, "राजा की नाँय, पिरजा की जय होय।'

फिर राजा अमात्य सों कहबे लगे, "महामात्य ! सिंह सों दुन्द जुद्ध करबे बारे जा हाथी के बच्चा कूँ राज की गज-साला में लै चलौ। वैद्यराज सों जाके घावन कौ उपचार कराय के लार - चाव सों जाकौ लालन-पारन होनौ चहिऐ।

"जैसी महाराज की आग्या" और अमात्य नै हाथी के बच्चा कूँ लै जाइबे के काजै एक सैनिक नियत कर दीयौ।

खाली रथ आगें-आगें चलौ। बाके पीछै राजा, पिरजा, सैनिक अमात्य और हाथी कौ बच्चा चले जाय रहे हे। पिरजा, राजा की जै-जै कार करती जाय रही ही। राजा पिरजा की जै - जै कार कर रहे हे और हाथी कौ बच्चा चिंघार कै बिनकौ समरथन कर रयौ हो। लगतौ हो असली राज - तन्तर की परिभासा इतिहास में चुप्पचाप नाँय, दुनियाँ कूँ सुंनाय-सुँनाय कै राजा और पिरजा के समरथन सों लिखाई जाय रही ही।

२

राज-महल में राजा-बल्लभ इत से उत कूँ चक्कर लगाय रहे हे। बिनके मुख पै चिन्ता पसीना के रूप चुचाय रई ही। वे भौत दु:खी से दीख रहे हे और बेर - बेर द्वार की ओर देख लेते हे मानौं काऊ के आगमन कौ या कोऊ सूचना सुनबे की राह जोह रये होंय।

बहुत अबेर तक वे इत-उत कूँ घूमते रहे, पर न उनके पास कोऊ आयौ और न बिनै कोई सूचना मिली।

तब ही अमात्य नै प्रासाद में प्रवेस कियौ और राजा कूँ उद्विग्न देख कै बोल परे, "महाराज ! चिन्ता की कोई बात नॉय आप बिसराम करें।"

राजा अधीर है गये, " महारानी की कुसलता कौ कोई-समाचार सुनाइये महामात्य।"

"महारानी सकुसल हैं, महाराज ! मैं अबई प्रसव - गिरह की राज परिचारिका सों बिनकी कुसलता लैंकै सूधौ आपके ढिग चलौ आय रयौ हूँ।"

"बु तौ ठीक हैं महामात्य पर प्रसव-सेविका अबई तोली चौं नॉय आई ?" राजा बिहल हैकै पूँछ उठे।

"आप चिन्ता नॉय करें। राज-सेवक रथ लैंकै बिनै लिबाइबे जाय चुकौ है महाराज।"

"जैसें ई बे आ जाइवें, हमें सूचित करियों।"

अमात्य राजा कूँ आस्वासन दैकें बोले, "जैसी आपकी आग्या महाराज ! मैं तुरत ई आपकूँ सूचित करूँगो" और राजा कौ अभिनन्दन करते भये अमात्य प्रासाद सों बाहर चले गये।"

राजा फिर प्रतीक्षा-रत इत-बित कूँ चक्कर लगाइबे लग गये।

तबई एक परिचारिका राजा के ढिग आई, "महाराज की जै होय···· राज-प्रसविका आय चुकीं है।

राजा कूँ ऐसौ लगौ, जैसें काऊ प्यासे कूँ सीतल-जल कौ जलासय पाय गयौ होय, बिननै अपने कण्ठ में ते हार उतार कै परिचारिका माँऊँ फैकौ, जाकूँ परिचारिका नै लपक कै अपने सीस सों लगाय लीयौ।

राजा बोले, "राज-प्रसविका कूँ बेग प्रसब गिरह में रानी के ढिग सादर लै जाऔ।"

परचारिका बोल परी, "महाराज ! प्रसविका, प्रसव-गिरह में जाय चुकीं हैं और बिननै महारानी कौ निरीच्छन करवौ सुरू कर दीयौ है।"

"अति सुन्दर" महाराज के मुख-मण्डल पै खुसी कौ पारावार झलकबे लगौ। बे बोले, "जैसें ही कोई खुसी कौ समाचार मिलै, हमें सूचित करो।"

महाराज कूँ अभिवादन करते भये परिचारिका "महाराज की जै होय" कहती भई प्रासाद सों बाहर चली गई।

महाराज पुन: इत - बितकूँ उतावरे से चक्कर लगायबे लगे और अपने पूरब जनन को इस्मरन करते गये। देवो, देवतान और कुल देवी लच्छमी जो कूँ मनायबो लगे।

तब ही बिनै लगौ कि कोई बिनते कह रह्यौ है, "राजा बल्लभ ! तेरी महारानी की कोख सों एक भौत ही पुन्य, परतापी बालक अवतरित है रयौ है, जु संसार कूँ समाजबाद और मानवता कौ महान सन्देस देगौ और परिजन हिताय एवं परिजन सुखाय के रूप में धरनी पै एक छत्र राज करैगौ।"

राजा नंगे पॉयन भाजते भये प्रासाद के निकट बने भये महालच्छिमी के मठ में गये और बिनें सासटांग परनाम करते भये कहबे लगे," हे महालक्ष्मी ! तेरी किरपा ते ही सिग हैं रहौ है। मैं तो तेरौ सेवक हूं। जौ देयगी, परसाद सरूप मैं गिरहन कर लुंगो।"

तबई लच्छमी जी के हाथ सों गिरकै एक फूल राजा के सीस पै जाय परौ, जाकूँ लच्छमी जी कौ असीस जान कै राजा नै माथे सों लगाय लोनों और पुन: महल में आयकै इत-वितकूँ टहलबे लगे।

तबई परिचारिका नै आय के महाराज कौ जयकारौ बोलौ, "महाराज की जै होय। महारानी नै पुत्तर-रतन कूँ जनम दीयौ है।"

जि सुनकै राजा कूँ ऐसौ लगौ, मानौ काऊ नै बिनके कान में अमरत टपकाय दीनौ होय अथवा काऊ नै समुन्दर - मन्थन करकै बिनके हाथ में अमरत-कलस पकराय दयौ होय अथवा संसार भर के जल-तरंग एक संग बज उठे होंय अथवा वीना और सारंगी के तार स्वम् बज उठे होंय अथवा पग में बाँधे बिना ही घुँघरू छनछनाय उठे होंय अथवा बिनके राज में स्वम् चलकै सुरग उतर आयौ होय अथवा अमरत कौ मेंह बरसबे लग गयौ होय।

राजा की खुसी कौ पारावार नॉय रहौ। बिननै अपनौ कण्ठ-हार दासी माँऊ उछार दीयौ। दासी नै खुशी सों कण्ठहार सीस सों लगाय कै अपने कण्ठ में पहर लीयौ और खुस होती भई महाराज कौ अभिवादन करती भई चली गई।

तबई अमात्य नै प्रवेस कियौ, 'महाराज की जै होय।"

महाराजा प्रसन्नता सों फूले नॉय समाय रहे हे। वे कहबे लगे, "महामात्य ! आज हम भौत प्रसन्न हैं। महालक्ष्मी नै हमें अपनौ महा परसाद दीयौ है।'

"हाँ महाराज ! अमात्य कहबें लगे, "जि सुनकै सिगन कूँ ही भौत खुसो भई है। खुसी कौ पारावार राज में हिलौर लै रह्यौ है।"

महाराज प्रसन्न हैकें बोले, "अमात्य ! अपने राज के दसों गामन में मिस्ठान्न वितरित किये जावें। दीन - दुखीन कूँ लत्ता, भोजन, मिठयाई के संग - संग, बसन - उढ़ैया, बिछैया, धन, धान्य कौ वितरन कियौ जाय। बालकन कूं मोदकन के संग-संग, खेल-खिलौना हूँ बाँटे जाँय ·· ···· कारागिरह में बन्द कैदीन कूँ मुक्त कर दीयौ जाय और बिनकूँ लत्ता, धन, भोजन, मिठयाई वितरित कीन्हीं जाय और···· ···और·····"

अमात्य प्रसन्नता सों बोले, "मैं सिग समझ गयौ राजन् ! पूरे राज में बन्दनबार बाँध दीन्ही गई है। ध्वजा फहराय दई गई हैं।

नारी-मंगला-चारन कर रई हैं। दसों गामन में भर-भर पेट मिठयाई वितरित कर दई गई है। राज की पिरजा उल्लास सों फूली नॉय समाय रही। पूरे राज में हरसोल्लास भर गयौ है। पिरजा अपने नये बालक राजा कौ आगमन सुनकै खुसो सों फूली नॉय समाय रही और घर-घर थारी बज रई हैं।

महाराज बोले, "राजकुमार के जनम कौ जि महोत्सव पूरे राज में सतत बारह दिनान तोलीं चलतौ रहनौ चहिऐ। बारहवें दिना राजकुमार कौ नाम-संस्कार होयगौ, जाते राजपण्डितन, पुरोहित, रिसी, मुनीन कूँ सादर निमन्तरन पठवाय देउ।'

"ऐसौ ई होयगौ महाराज ! अमात्य राजा कूँ अभिवादन करते भये भवन सों निकर गये।

सम्पूरन राज में मुनायदी करवा दई गई कि बारह दिनान तोलीं महात्सव मनाये जाइंगे।

नारी - समूह ने ढोलकन पै राजकुमार के जनम - सम्बन्धी गोत और मंगला चारन गाये।

पुरुष - समूह ने कबड्डी, पहलवानी के दंगल, रसियान के अलख जगाये।

संगोत - सम्मेलन और कवि-दरबार हू लगे, फिर घोड़ा और हाथोन नै अपने - अपने करतब दिखाये।

और आखिरी दिना घोड़ा, हाथीन की दौड़ भई, जामें मुकतेरे घोड़ा और हाथी लुढ़क गये और जीत कौ सेहरा बई हाथी के बच्चा के सीस पै बँधौ, जानै महाराज के अगारी सिंह सौ मल्ल - जुद्ध कीयौ हौ।

अन्त में बाई हाथी के बच्चा कूँ सजायौ और बाई पै बैठकै महाराज की सवारी निकरी। पिरजा नै राजा पै फूलन की बरसा करी।

जा पिरकार ग्यारह दिनान तक नाना पिरकार के उत्सव भये।

बारहवें दिना राज - भवन में रिसी, मुनि, राज-पुरोहित और पण्डित इकट्ठे भये।

राजकुमार के तगा बँधबे की तैयारी भई।

महाराज और रानी सिगन के सामी पट्टान पै विराजे।

महारानी की गोद में राजकुमार सुसोभित हे।

पहलौ हवन भयौ, फिर पण्डित जी नै महाराज और राजकुमार के माथेन पै रोरी सों तिलक कीयौ, चामर लगाये। महारानी नै अपने हाथ सों अपने माथे पै रोरी की बिन्दी लगाय लई।

फिर पण्डित जी नै महाराज राजकुमार और महारानी के हाथन में कलाये बाँधे।

सब किरिया पूरन हैबे के पीछै पण्डितन नै पत्रा खोल कें, राजकुमार कौ नाग मेस राशि में सब रिसि, मुनि और राजपुरोहित की सलाह सों 'अग्र' रखौ।

पण्डितन नैं राजकुमार कूँ 'चक्रवर्ती' हैबे कौ आसीस दीयो। उपस्थित जन-समूह फूलन की बरसा करबे लगौ।

राज-महल में संख, घड़ियाल विविध वाद्यन की ध्वनि के संग जै-जै कार कौ तुमुल घोस हैबे लगौ।

महारानी राजकुमार कूँ लैकें राज - महल में चलीं गयीं। महाराजा पिरजा कूँ अबेर तक आसीस देते रहे।

रिसी-मुनीन, राजपिरोहित और पण्डितन कूँ भोजन कराय कै दच्छिना दैकें सादर विदा कीयौ गयौ।

जाके पीछै दसौ गामबासीन की ज्यौनार भई। कुल्ला, सकोरा और पातर सबन के सामीं धर दीये गये, फिर मोदक, पूरी, कचौरीन, खीर, दूध, दही और घी बूरे की बौछार भई। ओक लगाय कै गंगा-सागर की धार सों द्यौ पोयौ गयौ। कौन सबसों जादा द्यौ पीय सकै-जा बात को हाड़-सी लग गई।

जब सब झिक गये तौ राजा के करमचारीन नै ऐलान कीयौ कि जो नर, नारी भगौना भरौ दूध पीय जावैगौ, बाकूँ रजत-सिक्का इनाम में सादर भेंट कीयौ जाबैगौ, पर सब पहलै ही झिक चुके हे। काऊ कौ साहस न भयौ कि भगौना भरौ दूध डकार जाबै।

भौत साहस करकै एक गामबासो सामीं आयौ। अबेर तक बु दूध के भगौना माऊँ निरखतौ रहौ, फिर बगद गयौ। अबेर पीछें फिर आयौ और भगौना म्हौं ते लगाय कै पीय गयौ।

सरकारी करमचारी नै बाकूँ रजत - सिक्का भेंट में दीयौ। बु परसन्न हैकै अपने ठीया पै जाय बैठौ।

अबकी बेर सरकारी करमचारी नै सुबरन कौ सिक्का दिखायक गामबासीन के सामीं ऐलान कीयौ, "जो गामबासी भगौना भरी खीर पीय जायगौ, बाकूँ महाराज को ओर सों सुबरन कौ सिक्का सादर भेंट कीयौ जायगौ।"

ऐलान सुनके सब गामबासी एक-दूसरे माँऊ बेबसी सों निहारबे लगे। दूध पीबे बारौ गामबासी बिचार उठौ कि पहलै दूध - पान न करकै बु भगौना - भरो खीर - पान कर लेतौ तौ चाँदी के सिक्का की बजाय बु सौने कौ सिक्का पाय लेतौ।

सब गामबासीन नै साहस खोय दीयौ, बे खीर खाइबे की हिम्मत नॉय कर पाये, चौकि वे तौ पातर पैई झिक चुके हे।

सरकारी करमचारी बोल उठौ, "परताप नगर में ऐसौ कोई माई कौ लाल नॉय जु भगौना की खीर खाय सकै।"

'माई कौ लाल नॉय' की धिक्कार भरी गारी-सी सुनकें सबन की धमनीन में रुधिर तेज गति सों प्रबाहित हैबे लगौ, पर खीर माँऊ देख कै उबकाई-सी आयबे लगी।

एक पहलवान उठकै भगौना माँऊ आयौ, पर जादा खीर देख कै बगदबे लगौ।

राज-करमचारी बुदबुदायौ, " हॉ ऑ ! उठाऔ भगौना और एकई उसाँस में खीर पीय जाऔ।"

पहलबान को साहस बढ़ौ। बानै खीर कौ भगौना उठायौ और म्हौं सों लगाय कै एकई उसाँस में पीय डारौ।

राज-करमचारी ने बाकूँ सौने कौ सिक्का सादर भेंट कीयौ।

अब दूसरे राज-करमचारी नै अपनी जेब सों हीरक-माल निकारकै गामबासीन के सामीं ऐलान कीयौ, "जो गाम-बासी भगौना भरौ द्यौपीय जायगौ बाकूँ जे हीरक-माल सादर भेंट करी जायगी।"

घोसना सुनकै सब गाम - बासी हक्का - बक्का रह गये। अब काऊ के पेट में तिल भर ऊ जग्गै नाँय रही, फिर हू हीरक - माल देखकै म्हौं में पानी आय जाबौ सुभाबिक हो। कभू बु पेट पै हाथ फेरते, कभू राज - करमचारी माऊँ देखते और कभू हीरक - माल और अपने साथी-संगीन की ओर बेबसी सों निहार कै नीचै नार झुकायकै बैठ जाते।

राज-करमचारी हुंकार उठौ, "कोई माई कौ लाल नाँय।"

राज-करमचारी की हुँकार एक गाम - बासी के सरीर में तीर-सी जाय घुसी, बु चिघारौ, "प्रताप नगर में एक ही नाँय-सबई-माई के लाल हैं और एक भगौना द्यौ की तौ चलाई कहा, तुम दस-भगौना धर देउ, मैं सबन नै पीय डारुँगो, पर आज सों तुम माई कौ लाल नाँम की गारी मत दीजो, नहीं तौ ……। बु राज - करमचारी माऊँ लाल-लाल आँखिन सों देखबे लगौ। करमचारी भयभीत है उठौ। तब द्यौ कौ भगौना उठाय कै एकई उसाँस में पीय गयौ।

करमचारी नै बाकी पीठ ठोंकी और हीरक-माल भेंट स्वरूप परदान कर दई।

गामबासी अपने ठीया पै जाय बैठौ।

अबकी ेर एक करमचारी एक उदला में मीठी मलाई ले आयौ और कहबे लगौ, "जो गामबासी उदला में भरी जा मीठी मलाई कूँ एक बेर में गटक जायगौ, बाकूँ महाराज की ओर ते सुबरन कौ हार इनाम में दीयौ जायगौ।"

घोसना सुन कै सब गामबासी एक-दूसरे के माऊँ निरखबे लगे, पर काऊ कौ साहस नाँय भयौ कि करमचारी के हातन ते उदला उठाय कै मौंह ते लगाय लेय।

करमचारी कह उठौ, "अब कोई पहलबान नाँय रह्यौ - जा राज में। सिगन की सिट्टी गुम है गई। सबन कूँ साँप सूँघ गयौ ?

तबई एक पतरौ सौ सींकिया पहलवान ठाड़ौ भयौ और करमचारी ते उदला लै गयौ और गटक गयौ। करमचारी नै बाकूँ सोने कौ हार दै दीयो। बु खुस हैकै जाय बैठौ।

जा तरियाँ राजा बल्लभ की जै-जै कार करते भये अपने - अपने गामन कूँ सब बिदा हैं गये।

× × ×

राजकुमार की जनम की खुसी में राजा बल्लभ नै जमुना के तीर पै एक नयौ नगर स्थापित कीयौ, जाकौ नाम 'अग्र' रखौ।

राजकुमार 'अग्र' के हाथ छिबाय कै जा नगर की नींव भरी गई ही।

नगर की स्थापना कै समय हू खूब रंगल - मंगल भये। नाच, गीत, दंगल, कवि दरबार लगे। कैऊ भोज दिये गये। हयं-हाथीन कौ दिखाबौ भयौ। खूब दुन्दभी बाजी ही।

राजकुमार कौ लालन-पालन बहुत ही लार-चाब ते भयौ हो। बे जा बात की हठ कर लेते, बाकूँ मनबाइबे कैई मानते हे। राजा बल्लभ कूँ हू बिनकी हठ पूरी करनी पड़ती ही।

किसोरावस्था में एक बेर एक घोड़ा पै चढ़कै अरण्य माँऊ निकस गये, जहाँ एक सिंह ते बिनकी मुठभेर है गई।

सिंह झपट कै इनके घोड़ा माऊँ लपकौ और घोड़ा पै ते बानै इनकूँ धरती पै गिराय लीनौ।

दोनोंन में युद्ध हैबे लगौ। कभू सिंह अग्र के ऊपर तौ कभू अग्र सिंह के ऊपर। दोनों लहू-लुहान है गये।

भौत देर पीछै सिंह के ऊपर अग्र लद गये। बाकौ म्हौं बिन नै चीर दियौ। कछू अबेर पीछे सिंह सान्त है गयौ।

तब अग्र घोड़ा पै चढ़के राज-प्रासाद में बगदे।

महारानी नै जब अग्र कूँ लहू-लुहान देखौ तौ बु भौत चिन्तित भई। बिननै एक सेबक कूँ राजःबैद्य कूँ बुलाइबे पठाय दीनौ, पर

जब बल्लभ कूँ राजकुमार की बीरता कौ भान भयौ तौ बे भौत खुस भये और बोले, "महारानी ! जामैं चिन्ता की कोऊ बात नाँय ।"

"पर महाराज" रानी दुःखी हैकै कहबे लगी, "राजकुमार लहू-लुहान है रये हैं । राज-बैद्य कूँ बेग बुलाय भेजौ ।"

"महारानी ! राजकुमार नै अपनी बीरता कौ पहलौ परिचय हमैं दीयौ है । हम भौत परसन्न भये ।" महाराज बोले, "एक बेर हमते हू सिंह कौ सामनौ भयौ हो । हमारी तरियाँ ही राजकुमार नै सिंह कौ म्हौं चीर डारौ है । जि अबस्य ही प्रताप नगर कौ नाम प्रकासित करिगे । हमें राजकुमार पै गरब है ।"

"पर महाराज !" महारानी उद्विग्न हैकै बोली "राज - बैद्य अबई तोलीं चौं नाँय पधारे ?"

तबई, राज-बैद्य आय पहुँचे, "महाराज की जै होय । महाराज ! हमें जि सुनकै भौत परसन्नता भई कि आपकी तरियाँ ही राजकुमार नै अपने हाथन ते सिंह कूँ चीर डारौ ।"

महाराजा परसन्न हैकै बोले, "जि सब महालच्छमी की किरपा ते भयौ है बैद्य जी ।"

"राजकुमार जुग-जुग जीयें और अपने पुरखान कौ नाम उजागर करते रहमें" राजबैद्य राजकुमार कूँ आसीस दैकै, बिनै बिसराम गिरह में लिबाय लै गये और बिनकै घावन पै जड़ी-बूँटी पीस - पीस कै लगायबे लगे ।

महाराज और महारानी आपस में बतरायबे लगे ।

महारानी बोली, "महाराज ! राजकुमार के सम्बन्ध में अब आपनै कहा बिचार कीयौ है ?"

महाराज कहबे लगे, "महारानी ! राजकुमार की सिच्छा - दीच्छा तौ पूरी है गई । ये वेद, शास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र और अस्त्र-शस्त्र कौ पूरौ ग्यान ग्रहन कर चुके हैं, अब तौ बिनकौ ब्याह है जानौ चाहिए ।"

महारानी परसन्न हैकै बोली, "महाराज ! आपनै मेरे म्हौं की

बात छुड़ाय लीनी । मैं हू जेऊ चाहूँ कि राजकुमार कौ ब्याह है जाय चौकि बे सभी विद्यान में पारंगत है चुके हैं ।"

तबई अमात्य नै आयकै महाराज कौ जयकारौ बोलौ, 'महाराज की जै होय ।'

"कहा बात है महामात्य ?" महाराज बिस्मै से पूछबे लगे ।

"महाराज ! दुसमन नै प्रताप नगर पै आकमरन कर दीयौ है ।"

"कहा कह रये हौ महामात्य !" महाराज चौंक गये ।

"मैं ठीक कह रह्यौ हूँ राजन !" अमात्यकहबे लगे, "सुनबे में जि आयौ है कि आपके अनुज कुन्दसेन जी कौ जामें हाथ है ।"

"मेरौ छोटौ भैया ... ... कदापि नाँय" महाराज बोले, "बु ऐसौ नाँय कर सकै । आपकूँ भरम भयौ है महामात्य "

"आपकौ अनुमान ही सही निकसै" अमात्य कहबे लगे, "पर दुसमन की सैना प्रताप नगर में प्रबेस करबे बारी है महाराज ।"

तबही राजकुमार अग्र हाथ में तरबार लैकै बाहर निकर आये, "अमात्य जी ! मैं दुसमन कौ सामनौ करूँगो । आप अपनी सैना लैकै बेग चले आऔ ।"

"पर आप तौ जग्गै-जग्गै ते घायल हौ राजकुमार—आप सैना को संचालन कैसें कर पाउगे ?"

"महामात्य ! आप चिन्ता मती करौ । मैं संचालन कर लुँगो ।" कहकै राजकुमार नै महाराज और महारानी के चरनन कौ इसपरस कीयौ ।

महाराज नै राजकुमार कूँ आसीस दीयौ, पर महारानी कौ मन पसीज गयौ । बिननै राजकुमार कूँ रोकबौ चाहों, पर महाराज के आसवासन पै महारानी नै हू राजकुमार कूँ आसीस दै दीयौ ।

प्रताप नगर में जुद्ध की भेरी बज उठी । सैनिक ढार और तरबार लैकैं निकर परे । सबन की जुबान पै एक ही सुर हो :—

मारिंगे या मर जामिंगे"
अरि-दल कूँ मार भगामिंगे !
प्रताप नगर कौ धुज फहरामिंगे,
अरि-दिल कूँ मारिंगे-मारिंगे ।।

सीस पै पगरी और तन पै गेरुआ बसन धारन करे, हाथन में ढार, तरबार और भाले, तोर-तरकस समारे प्रताप नगर के सैनिक मोरचा माँऊँ बढ़े चले जाय रये हे और महाराज बल्लभ की जै और राजकुमार अग्र की जै बोलते जाय रये हे ।

एक ओर पैदर सैना ही, दूसरी ओर हाथी घोरान पै सबार सैनिक बढ़े चले जाय रये हे । सबते आगें हाथी पै सबार राजकुमार शंख-धुनि करते भये सैना कौ संचालन कर रये हे ।

जैसें ही राजकुमार की सैना मोरचा पै पहुँची, बैसै ही अरि - दल की सैना हू आगें बढ़ी । राजकुमार की सैना अरि - दल पै टीढ़ो-दल की तरियाँ टूट परी !

पैदर ते पैदर सैनिक भिर गये । घोराबारी सैना ते घोरा-दल भिर गये । हाथी-सैना ते हाथी बारी सैना कौ जुद्ध हैबे लगौ । घमा-सान जुद्ध भयौ ।

राजकुमार अरि - दल के राजा ते जुद्ध करबे लगे । तरबार, तीर, भाले चलबे लगे । आसमान में तीर ही तीर तैरबे लगे ।

राजकुार नै अरि-दल के राजा कौ पीछौ कीयौ । बु पीठ दिखाय कै भाजबे लगौ । राजकुमार बाके पीछै भाजे और बाकूँ हाथी ते नीचै गिराय लीयौ ।

बाकी सूरत देख कै राजकुमार भौचक्के रह गये । बिनके म्हौं ते निकसौ, "काका श्री आप ! आपनै आकमरन कीयौ—प्रताप नगर पै । आप माँगते तौ हम प्रताप नगर आपकूँ वैसे ही दै देते !"

"मैं भिखारी नाँय राजकुमार" कुन्दसेन बोलौ, "मैं प्रताप नगर कूँ लरकै लुँगो ।"

"काकाश्री ! मेरे रहते तौ आप जा जनम में प्रताप नगर नाँय हासिल कर सकौ ।

"तोय मार कै तौ हासिल कर सकुँगो" कहबे के संग ही कुन्द-सेन नै तरबार कौ बार राजकुमार पै कीयौ । राजकुमार बार कूँ बचाय गये ।

अब राजकुमार नै कुन्दसेन पै बार कीयौ, पर बु बार बचाय कै घोरा की पीठ पै बैठकै मैदान ते भाज गयौ । बाके भाजते ही बाकी सैना हू भाज दई ।

कुन्दसेन की सैना के भागते ही जुद्ध-स्थल में दुन्दभी बज उठी । राजकुमार अग्रसेन की जै के नारे नभ और थल पै गूँज उठे । नाग लोक के राजा कुमुद कूँ बहुत परसन्नता भई ।

राजकुमार अग्र विजय-पताका फहराते भये राज - प्रासाद में पहुँचे । बिन नै महाराज और महारानी ते आसीरवाद लीयौ ।

जब बल्लभ कूँ ग्यात भयौ कि बिनकौ अनुज कुन्दसेन, बिनके बिपच्छ में प्रताप नगर कूँ हथियाबे कूँ जुद्ध करबे कूँ आयौ हो तौ बिनै अपार दुःख भयौ ।

छोटौ-सौ राज पाबे के काजै खून-खराबौ होय-जि बात बिनै नीकी नाँय लगी । बिननै फैसलौ कियौ कि कुन्दसेन कूँ प्रताप नगर कौ आधौ राज दै दीयो जाय, पर राजकुमार अग्र कूँ जि बात उचित नाँय लगो ।

तब राजा नै अपने सभासदन कूं बुलाय कै, बिनते राय लैनी चाही । सभासद हू जा बात कूँ मानबे के काजै तैयार नॉय भये कि प्रताप नगर कूँ दो टूंकन में बितरित कियौ जाय ।

राजा बल्लभ कछू निरनय नाँय लै पाये कि कहा कीयौ जानौ चहियै ।

बिननै कुन्दसेन कूँ राज - सभा में सादर आमन्तरित कीयौ । बाके आगमन पै बाकौ आदर-सतकार करकै एक सिंहासन पै बिराज-मान करायौ और बाके सामई आधौ राज दैबे कौ परसताव रखौ और

बोले, "कुन्दसेन ! तुम हमारे अनुज हौ। यदि तुम पहल कहते तौ राजगद्दी तुम कूँ सौंप देते ·· अब तुम चाहौ तौ राज के द्वै भाग करकै एक भाग पै तुमकूँ सिंहासनारूढ़ करायौ जा सकै है ·· हालाँकि तुमनै राज पै हमला करकै 'बागी' बनबे की उपाधि पाय लई है।"

कुन्दसेन कुपित है गयौ। दाँत पीस कै कहबे लगौ, "भिच्छा में मोय राज नॉय चहियै। मैं आप लोगन की दया कौ आभार मानूँ हूँ। मैं पूरौ राज लुंगो और अपने बाहु बल ते जीत कै लुँगो।"

तबई राजकुमार कह उठे, "काका श्री ! अपने बाहु - बल कौ परनाम तौ आप जुद्ध में ही देख चुके हौ।"

"बच्चा !" कुन्दसेन गुस्सा करकै बोलौ, "भौत बढ़ कै मती बोल···बु दिना दूर नॉय, जब विजयश्री मेरे चरन पखारेगी और तब तोय जा राज ते निसकासित नॉय करौ तौ मेरौ नाम हू कुन्दसेन नॉय।"

जि सुनकै अग्र नै तरबार निकार लीनी। सैनिकन नै कुन्दसेन कूँ चारों लंग ते घेरा में लै लीयौ।

"इकलौ जानकै मोय गिरफ्त में लैनौ चाह रहे हौ—सब जने ··· पर मैं हूँ अपने पूरबज धनपाल की सपथ लैकै कह रहौ ऊँ कि जब तलक प्रताप नगर की राजगद्दी हासिल करकै राजकुमार अग्र कूँ राज ते निसकासित नहीं कर दुँगो, अन्न-जल गिरहन नहीं करुँगो।"

"तब तौ काकाश्री आपकू बिना अन्न-जल गिरहन करे ही जा संसार ते बिदा लैनी होयगी" कहकै राजकुमार अट्टहास करबे लगे। सभा में कहकहा लग उठे।

"इतनौ भयंकर अपमान !" कुन्दसेन चीख उठौ, 'जितेक भयानक अपमान ! बितनी ई भयानक मौत तोय मिलैगी अग्र।"

कुपित कुन्दसेन बगदबे लगौ तौ सैनिक नै बाकूँ रोकबौ चाहौ, पर महाराज के संकेत पै बाकूँ जान दीयौ गयौ। कुन्दसेन पाँय पटकतौ भयौ राजसभा ते बाहर चलौ गयौ।

कुन्दसेन के चले जाइबे के पीछै महाराज बल्लभ नै चिन्ता

व्यक्त करकै कही, "जि ठीक नॉय भयौ·····कुन्दसेन कौ इतेक अपमान करबौ उचित नॉय हो।"

महामात्य कह उठे, "महाराज ! और बिनकौ बागो बनकै प्रताप नगर पै चढ़ाई करबौ का उचित हतौ ?"

"बु हू अनुचित हो" महाराज बोल उठें," कोऊ दूसरौ गलती करे, तौ हम हू बाई की तरियाँ गलती कर उठें—जि नैकऊ ठीक नॉय अमात्य !'

तबई राजकुमार बोल परे, "तब का काकाश्री की गद्दारी सहन करबे के काबिल हती महाराज ?" "हूँ" कहकै महाराज बिचार-मगन है गये। फिर बोले, "पर कुन्दसेन कौ साहस सराहबे के जोग हैं। राजकुमार ! कुन्दसेन हमारे पूरबज धनपालश्री की सपथ लैकै गयौ है।"

"महाराज ! काका श्री जा जनम में जीत कै प्रताप नगर कूँ नॉय पाय सकैं, फिर मेरे निसकासन की बात कहकें तौ बिननै हमारे पूरबज धनपाल श्री कौ मान नॉय रख पायौ।"

महाराज चिन्ता मगन हैकै कह उठे, "राजकुमार ! कुन्दसेन तौ पूरबज श्री कौ मान नॉय रख पाबैगौ, पर धनपाल श्री हमारे हू तौ पूरबज हैं ·····हमें तौ बिनकौ मान रख लैनौ चहियै ना ?"

"मैं आपकौ मतलब नॉय समझौ महाराज ?" राजकुमार कह उठे।

महाराज गहरे बिचारन में डूबते भये बोले, "मतलब साफ है, राजकुमार ! कुन्दसेन में हमारे जीते जी इतनी हिम्मत नॉय कि बु प्रताप नगर कूँ जीत कै सिंहासन पै बैठ सकै ·····पर बानै पूरबज श्री की सपथ लई है, ····· यदि बु ऐसौ नॉय कर सकौ तौ हमारे पूरबज श्री कौ मान नॉय बढ़ैगौ, पर हमें तौ जि मंजूर नॉय कि पूरबजश्री कौ मान नॉय बढ़े।"

"हमारे पूरबज श्री कौ मान तौ बढ़नौ ही चहियै महाराज !" कहकै राजकुमार फिर बोले, "पर काकाजी की पराजय ते जाकौ कहा सम्बन्ध, क्यों कर है ····· मैं आपकौ मतलब नॉय समझौ ?"

महाराज हँसे, बोले, "राजकुमार ! जब कुन्दसेन प्रताप नगर कूँ विजित नॉय कर पाबैगौ, तौ बाकौ वचन झूँठौ होयगौ और जब बचन झूठौ होयगौ तौ पूरब श्री की सपथ झूठी होयगी···· ··· पूरब श्री की सपथ झूठो होयगी तौ बिनकौ अपमान होयगौ··· जा अपमान के जुम्मेदार हम बनिंगे राजकुमार ।"

राजकुमार हूँ हँस दीये, "तौ हमें काकाश्री कूँ प्रताप नगर दे दैनौ चहियै·····नाटकीय ढंग ते पराजित हैकैं ?"

महामात्य बोले, "और कछू दिना पीछै राज कूँ जीत लैनौ चहियै" कह कै अमात्य हँस दीये । महाराज, राजकुमार और सभासदन के अट्टहास ते प्रासाद गूँज उठौ ।

३

कुन्दसेन नै प्रताप नगर पै अधिकार कर लीनौ ।

बु खुसी ते इतेक बाबरौ है गयौ कि बु जेउ नॉय जान सकौ कि खाली सिंहासन पै तौ कोऊ हू अधिकार कर सकै है । बामैं बानै कुनसौ तीर मार मार लीयौ ।

बिना जुद्ध करे कुन्दसेन कूँ सिंहासन मिल गयौ और बु महाराज बन गयौ ।

बानै राजा बल्लभ, राजकुमार अग्र और बिनके अमात्य कूँ नॉय देखौ तौ अचरज ते घिर गयौ, पर समझ कछू नॉय पायौ ।

कुन्दसेन नै ऐलान करायौ कि प्रताप नगर कौ नाम बदल कै कुन्दसेन नगर रखौ जाय है । जु कोऊ नगरबासी प्रताप नगर कौ नाम लेयगौ, बाकूँ मौत के घाट उतार दीयौ जायगौ ।

राजबासी कुन्दसेन ते भयभीत है गये और बु प्रताप नगर कौ नाम बिसार बैठे ।

कुन्दसेन नै अपने अमात्य कूँ आदेसित कीयौ, "मैं राजकुमार अग्र कूँ निसकासन कौ दण्ड दै रयौ हूं । अगर राजकुमार मेरे राज में नगरबासीन के आवास में मिलै तो राजकुमार और बाके आसरौ दैबे कूँ सूली पै चढ़ाय दीयौ जाय·····महाराज बल्लभ, बिनकी रानी और बिनकौ अमात्य मेरे कैदी माने जाइंगे । बिनकूं सरन दैबे बारेन कूँ हू काल-कोठरी में डार दीयौ जाय ।"

प्रताप नगर कौ नाम मिट गयौ । कुन्दसेन सुरा और सुन्दरीन में रम गयौ । कछू दिना पीछै, कुन्दसेन नगर कौ हू नाम बदल कै कुन्दसेन नै सुरा-सुन्दरी नगर धर दीयौ ।

सकारे ते लैकै संजा तोली राज - प्रासाद में सुन्दरीन के नाच-गान चलते रहे । पंसुरीन की झनक रहती । सुरा एक हाथ ते दूसरे हाथन में थिरकती रहती । मादक और मनभावने वाद्य बजते रहते । कुन्दसेन मदमातौ रहतौ ।

मदमाते कुन्दसेन नै नगर कौ नाम सुरा-सुन्दरी नगर हटाय कै 'मदमातौ नगर' धर दीयौ और कछू दिना पीछै बाकौ नाम 'खुसी नगर, "फिर सुरग नगर', फिर 'राज नगर' फिर 'परी नगर', फिर 'जलपरी नगर', 'मयूरी नगर', 'कोकिला नगर', 'मधु नगर', और न जानें कुन-कुन सौ नगर धर दियौ।

निवासीन को तौ चलाई कहा, खुद कुन्दसेन हू अपनी राजधानी कौ नाम बिसार बैठौ और जो मन में आयौ बाई नाम ते राजधानी कौ नाम पुकार उठौ।

बानै सुन्दरीन की सेना कौ गठन कीयौ। सेना-नायिका महान सुन्दरी कूँ नियुक्त कीयौ। राज-प्रासाद में ऊँचे - ऊँचे पद सुन्दरीन कूँ दै डारे।

कुन्दसेन हर माह सुन्दरीन की प्रतियोगिता राजधानी में करबातौ और सर्व सुन्दरी घोसित हैबे बारी सुन्दरी कूँ महामात्या नियुक्त करकै बाकूँ अपने समीप रखतौ। बाई ते राज - संचालन हेतु राय लेतौ।

सुन्दरीन कूँ सिग जग्गै रखबे के कारन राजबासी कुन्दसेन ते खीज उठे। बे बलबौ हू कर देते, पर दण्ड के भय ते दबे रहे और तटस्थ हैकै राज-संचालन कूँ देखबे लगे। बे कुन्दसेन कूँ देख कै बाकी मन ही मन में उपेच्छा करबे लगे।

पल्लंग कूँ राजा बल्लभ अपनी महारानी, राजकुमार, अमात्य, महामात्य और सेना कूँ लैकै जमुना नदी के किनारे अग्रपुर चले आये।

जि नगर राजा बल्लभ नै राजकुमार अग्र के जन्मोत्सव की खुसी में बसायौ हो तथा जा नगर की नींव राजकुमार के हाथ कूँ छुबाय कै भरबाई गई ही। जा तरियाँ राजकुमार जा अग्रपुर में दूसरी बेर पधारे हे।

अपने संस्थापकन कूँ, राज-परिवार कूँ आयौ जानकै अग्रपुर नै बिनकौ खुले मन ते आदर-सत्कार कीयौ। बाकी प्रसन्नता कौ पारबार नॉय रह्यौ।

अग्रपुर निवासीन नै हू अपने महाराजा, महारानी, राजकुमार कौ हिरदै ते मान रखौ। बिनके चरन पखारे। बिनकी जै - जै कार करी। बिनके आगमन की खुसी में नाच, गान, संगीत सम्मेलन, कवि-सम्मेलन आयोजित करबाये। कुस्ती के दंगल भये, भोज रखे।

देर रात तलक विभिन्न उत्सव संचालित हैते रहे। बीच-बीच मैं महाराज बल्लभ, महारानी तथा राजकुमार अग्र के जैकारे बुलते रहे।

महाराज नै अग्रपुर निवासीन कूँ सम्बोधित कीयौ, "अग्रपुर बासीयौ ? आपके स्वागत, सम्मान नै हमकूँ अपना बनाय लीयौ है। हम पैंतीस साल पीछे इहाँ आये हैं पर आपकौ प्रेम देख कै ऐसौ लगै है कि हम अग्रपुर की स्थापना करकै प्रताप नगर बगदे ही नॉय हे। यहाँ ही जन-जन में निबास कर रहे हे। हम अबई कछू समै और इहाँ निबास करिंगे।"

राजकुमार बोले, "मोय निरवासन कौ दण्ड मिल्यौ है—अपने काकाश्री ते। जाकूँ भुगतकै मैं फिर प्रताप नगर बगदुँगो।"

तबई गुप्तचर आयकै महाराज कौ जैकारौ दैकै बोलौ, 'महाराज की जै होय।"

राजकुमार नै पूछी, "कहा समाचार लाये हो दूत ?"

दूत बोलौ, राजकुमार ! कुन्दसेन नै प्रताप नगर के इतने नाम बदले, लाग ओर खुद कुन्दसेन हू अपनी राजधानी कौ नाम भूल गये हैं। म्हाँ नारीन कौ राज हो रह गयौ है।"

"कहा मतलब ?" राजकुमार नै पूछीं।

दूत बोलों, "मतलब जि कि नारी के हाथन ही सेना की बागडोर पकराय दई गई ऐ। नारी ई म्हाँ सेना-नायक, अमात्या, महामात्या चुन लई गई ऐ। म्हाँ के निबासी जा बात ते कुन्दसेन ते कुपित ऐं और बलबौ करबे की सोच रये ऐं।"

"अति सुन्दर समाचार लाये हों दूत" दूत कूँ गरे में ते हार उतार कै दैते भये राजकुमार बोले, "अगली पूरनमासी कूँ हम कुन्द-

सेन की राजधानी पै आकमरन करकै अपनी राजधानी बिनते मुक्त कराय लिंगे, तब तक तुम छिन - छिन कौ समाचार हमें भिजबाते रहौ।"

"जैसी राजकुमार की आग्या" कहकै महाराज, महारानी और राजकुमार की जै जै कार करकै दूत बगद गयौ।

दूत के चले जाइबे के पीछै राजकुमार, महाराज सों बोले, "महाराज ! काकाश्री कुन्दसेन जादा चालाक ऐं। बिननै नारी के हाथन में सेना और राज कौ संचालन दैकै निपुनता कौ काम कीयौ है।"

"हूँ।" कहकै महाराज रह गये।

राजकुमार कहबे लगे, "कोऊ नपुंसक ई नारीन पै प्रहार करैगौ। वीर न तौ नारीन पै आकमरन करैगौ और न नारीन की राजधानी कूँ लैबे की सोच सकै है।"

"हूँ।" कहकै महाराज सोच में पर गये।

राजकुमार कहबे लगे, "मैं तौ नारीन की सेना ते जुद्ध करंगो नॉय महाराज और न महामात्य ही ऐसौ कर सकिंगे।"

"चिंता की कोई बात नॉय महाराज" महारानी कहबे लगीं, "मैं खुद नारी-सेना कौ सामनौ करकै, बिनै पराजित करकै अपनी राजधानी जीत लुँगी।"

राजकुमार बोले, "महाराज ! पूरनमासी तक हम नारी-सेना तैयार कर लिंगे, जाकौ संचालन महारानी करिंगी।"

"ठीक है" महाराज नै सहमति दई, "वैसें तौ महारानी इकली ही जा काम कूँ बहुत हैं, पर नारी - सेना हू तैयार कर लेउ राजकुमार।"

जा तरियाँ महीना भर तोली अग्रपुर की चुनी भई नारीन कूँ सैनिक-सिच्छा परदान करी गई।

तरबार, तीर, भाले और अन्य जुद्ध-सामगरी ते नारी-सेना कूँ दच्छ कीयौ गयौ।

और पूरनमासी कूँ महारानी नै अपनी नारी-सेना समैत कुन्द-सेन पै धाबौ बोल दीयौ।

कुन्दसेन अपने रंग-महल में बैठौ सुरा-सुन्दरीन में मस्त हौ। जब बाकूँ ग्यात भयौ कि बाकी राजधानी पै धाबौ बोल दीयौ गयौ है, तौ बु बौखलाय उठौ और चीख परौ, "नारीन की राजधानी पै कुनसे नपुंसक नै हमला कीयौ ऐ ?"

अमात्या नै बतायौ, "महाराज ! हमलावर नारी ही ऐ।"

"का कही। नारी नै हमला बोलौ है" कुन्दसेन बोलौ, "नारी सैना तौ हमारे राज के सिवाय काऊ राज के पास नॉय।"

"है तौ नॉय महाराज" अमात्या नै बतायौ, "पर नारी - सेना बनायकै भेजी गई है।"

"कुनसे राज ते नारी-सेना आई ऐ ? कुन्दसेन पूँछ उठै।

अमात्या बोलीं, "अग्रपुर ते राजकुमार अग्रसेन की नारी-सेना नें आकमरन कीयौ है और सेना कौ संचालन कर रई ऐ—खुद महारानी।"

तौ जाओ और जुद्ध करकै सिग सेना कूँ मौत के घाट उतार देउ" कुन्दसेन चीखौ।

"हमारी सेना तौ बिनते जुद्ध कर रई ऐ महाराज !" कहकै अमात्या मौन है गई।

"महाराज की जै होय" दूती नै आयकै महाराज कूँ सन्देस दीयौ, "लरत-लरत हमारी सिग सेना मारी गई.....अब बिनकी सेना महल में प्रबेस करबे ई बारी ऐ ..... आप गुप्त द्वार ते भाग कै अपने प्रान बचाओ।"

जि सुनकै कुन्दसेन रंग - महल ते उठकै गुप्त द्वार माऊँ भाग दीयौ।

महारानी राज-प्रासाद में आय चुकी ही, जिनकूँ देख कै सब जने महारानी को जै-जै कार कर उठे।

× × ×

प्रताप नगर अब अग्रसेन के अधिकार में हो। यहाँ के निवासी अग्रसेन ते बहुत खुस हे। राजा बल्लभ बूढ़े है चले हे अतः महारानी नै बिनकूँ सलाह दई कि वे परजा की मंसाह जान कै राजकुमार कौ राज्याभिसेक कर दें।

महाराज कूँ महारानी की सलाह नीकी लगी।

जब राजकुमार सिग जुद्ध-बिधान में पारंगत है गये और सासन करबे के जोग्य समझे जाइबे लगे तौ परजा की राय जान कै राजा बल्लभ नै सुभ महूंरत में अग्रसेन कौ राज-तिलक कर दीयौ और खुद बन में तपस्या करबे चले गये।

४

महाराजा अग्रसेन की वीरता और रन - कौसल की चरचा चारों दिसान में फैल चुकी ही। अनेक महाराजान की कन्यान के सम्बन्ध अग्रसेन के सामीं आय चुके हैं, पर स्थान - स्थान पै आइबे - जाइबे के कारन बु ब्याह करबे के काजै अपनौ मन स्थिर नॉय कर पाये है, फिर महाराजा बल्लभ के राज - काल के समै ते नागलोक के राजा कुमुद अपनी कन्या के बिबाह कौ प्रसताब बेर-बेर रख चुके हे।

अबई अपने ब्याह के सम्बन्ध में बे कछू निरनय नॉय लै पाय रये हे। तबई नागलोक नरेस अपनी बेटी सुकन्या माधवी कूँ लैकै भूलोक पै आय गये।

माधबी के चरन भूलोक पै आते ई चहुँ ओर प्रकाल फैल गयौ। माधबी कूँ निरखते ही धरती के पौधा फूलन कूँ खिलाय कै झूम उठे।

सुगन्धित पवन मन्थर गति सौं बहबे लगौ। माधवी की देह की सुबास, पवन में मिल कै मादक बन गई। बाकी सुन्दरता चारों लंग बिछ गई। लगतौ हो धरती पै सुरग उतर आयौ है। देवता हू माधवी की सुन्दरता निरख कै स्तब्ध रह गये।

जब इन्द्र नै माधवी कूँ भूलोक में देखौ तौ सुरग ते आइकै नागराज कुमुद ते बिनती करबे लगौ, "माधवी तौ इन्द्रलोक में रह कै मेरो इन्द्रानो बनैगी ···चलौ, इन्द्रलोक में जाकूँ लै चलौ··· धरती की माँटो में जाके पॉय मले है जाइंगे।"

कुमुद कहबे लगे, "राजा इन्द्र ! माधवी अग्रसेन की अमानत है। मैं बिनैई जाकूँ सौंपने आयौ हूँ।"

जि सुनकै इन्द्र कुपित है गये, "देवता के रहते मानव कूँ सौंप देउगे तुम सुन्दरता की जा महारानी कूँ ····· जि तुम ठीक नॉय करौगे और अग्रसेन कूँ हूं जि मेंहगी परैगी नागराज !"

नागराज हू कुपित है गये, "देवराज ! अब अग्रसेन इकले

नॉय । अब नाग जाति हू बिनके संग है । बैसें तौ बिनकी बीरता के सामईं तुम ठहर नॉय सकौ और अगर ठहर हू गये तौ हम हू बिनके संग हैं । हम तुम कूं बिनके सामई ठहरन नॉय दिंगे ।"

"इतेक घमण्ड तुम्हें नाग जाति और राजा अग्रसेन पै ?" देवराज कुपित है उठे, "मैं माधवी कौ अपहरन करकै लै जाय रयौ हूँ । बुलाय लेउ तुम अपने हिमायतीन कूँ" कहकै देवराज माधवी कौ हाथ पकर कै खैंच उठे ।

माधवी चीख उठी । बाकी चीख रथ पै अपने प्रासाद माँऊ बन ते बगदबे बारे अग्रसेन के कानन में परी बिननै रथ बितो माँऊ दौराय दीयौ ।

नागराज और देवराज अपनी - अपनी खड़ग निकार कै जुद्ध करबे लगे ।

अग्रसेन नै अपनी धरती पै नागराज और माधवी कूँ देखौ तौ अचरज में पर गये । माधवी अग्रसेन के रथ पै जाय बैठी बानै सब किस्सा अग्रसेन कूँ बताय दीयौ ।

अग्रसेन कुपित है गये । बिन नै जुद्ध के काजैं देवराज कूँ ललकारौ और खड़ग चमकबे लगी । देबराज और अग्रसेन गुथबे लग गये ।

अबेर तोली जुद्ध होतौ रहौ । न कोऊ जीतौ, न हारौ । देवता हू नभ ते उझक कै देवराज कूँ धिक्कार उठे ।

तबई नारद जी प्रगट है गये, "नारायन ! नारायन !! देवराज पराई नारी के काजै बाके पति ते जुद्ध कर रये हैं ?"

"पराई नारी····पति··· जि आप कहा कर रये हौ देवरिसी ?" देवराज खड़ग रोक कै पूछबे लगे ।

"मैं ठीक कह रयौ हूँ देवराज !" नारदजी बोले, "राजा अग्रसेन के गरे में माधवी द्वारा पहराई गई वर - माला की ओर देखौ— रथ में बैठत ही माधवी नै अग्रसेन कूँ वरन कर लीयौ हौ और आप बाकूँ इन्दरानी बनाइबे के सपने देख रये हौ ?

तबई इन्द्रानी प्रकट है गई और कहबे लगी, "देबरिसी ! देवराज मेरौ इस्थान कौन कूं दैनौ चाह रये हैं" और बु देवराज माऊँ कठोर निगाह ते देखबे लगीं ।

इन्दरानी कूँ देख कै देवराज सकपकाय कै कहबे लगे, "देवि ! देवरिसी की तौ ठिठोरी करबे की लत है । भला तुम्हारे रहते कोई दूसरी इन्दरानी इन्दरलोक आय सकै है ?"

"और आप राजा अग्रसेन ते खड़ग चलाय कै चौ जुद्ध कर रये हैं ?" देवराज सों देवरानी पूछबे लगी ।

देवरिसी बीच में बोल परे, "देवराज राजा अग्रसेन कौ बाहुबल देख रये हे देवरानी" फिर बे देवराज सों धीरे ते बोले, "देवराज अब आप राजा कूँ छाती सों चिपकाय कै सब दुसमनी बिसार देउ ।"

देवराज नै राजा कूँ छाती ते लगाय लीयौ और नागराज सों हू छिमा-याचना करी ।

ब्रह्मा हू प्रकट है गये । बिननै हू मध्यस्तता कर कै राजा और देवेन्द्र की अरिता कूँ दोस्ती में बदलबे कूँ कही ।

महाराजा अग्रसेन और माधवी कूँ नागराज, ब्रह्मा, देवराज, देवरानी, देवरिसी नै आसीस दीयौ ।

अग्रसेन माधवी कूँ रथ पै बैठायकै प्रासाद में लै गये और विधिवत् ब्याह करकै सुख ते रहबे लगे ।

माधवी रानी बनकै प्रासाद में बिचरन करबे लगी ।

× × ×

तप करते-करते अग्रसेन के जनमदाता बल्लभ सुरग सिधार गये, जिनकौ पिण्ड-दान करबे अग्रसेन मन्तरीन, सैनकिन, धरमाचार्यन, महामात्य सहित लोहागढ़ गये, जहाँ बिननै पिण्ड-दान कीयौ, बल्लभ नै पिण्ड-दान स्वीकार कर लीयौ । बिनै मुकती मिल गई ।

जि देख कै अग्रसेन भौत प्रसन्न भये और ब्राह्मनन कूँ भोजन कराय कै, दच्छिना दैकै अपने लसकर सहित अपने राज माऊँ कूच कर उठे ।

महाराजा अग्रसेन हाथी पै आसीन हे। बिन के संग ई बिन के परिचारक, धर्माचार्य और मन्तरी हे, आगें-आगें बाद्य बज रये हे।

चलते-चलते बे सिग जने एक बीहड़ बन में आय पहुँचे, जा ठीया पै एक सिंहनी प्रसव कर रई ही।

ढोल, ताँसे आदि बाद्यन की ध्वनीन सों सिंहनी के प्रसब में बाधा पहुँच रई हो। कुतूहल पूरन जा बाताबरन में जब सिंहनी के सिसु नै जनम लीयौ तौ बु इन ध्वनीन कूँ सुन कै कुपित है गयौ और बानै महाराजा अग्रसेन के हाथो पै उछार मार कै आकमरन कर दीयौ।

जि सब निरख कै महाराजा कूँ भौत अचरज भयौ कि जि जग्गै इतनी बीर - प्रसूता है कि जनमते ही सिंहनी के बच्चा नै बिनके हाथी पै उछार मार कै हाथी कूँ घायल कर दीयौ। बु अचरज ते बोले, "बाह ! ऐसी बीर-प्रसूता धरनी कूँ मै परनाम करूँ हूँ।"

और बिननै अपनौ लसकर बाई ठीया पै रोकबे की आग्या दई।

सैनिकन नै बाई ठोया पै तम्बू गाढ़ दोये, और सिग जने अपने अपने तम्बून में बिसराम करबे लगे।

सिंहनी अपने मरे भये सिसु कूँ म्हौ में दबाय कै बा ठीया ते भाग गई।

महाराज अग्रसेन नै अपने धर्माचार्यान ते राय लई कि चौंना जाई ठीया पै अपने राज की नवीन राजधानी कौ निरमान करायौ जाय। सिगन नै महाराज की सूझ-बूझ की सराहना करी।

महाराज भौत परसन्न भये और अपनी नई राजधानी की नींव बिननै बाई ठीया पै धर दई। पचासन सिल्पकार बाके निरमान में लग गये।

बीस हजार बीघा में महाराज नै निरमान कौ काम सुरू करायौ। जा नगर के चारों लंग पक्की चार दीवारी और खाई खुद-बाई जु नगर की सुरच्छा के काजै आवस्यक ही।

नगर में प्रबेस करबे कूँ भौत भव्य और बिसाल द्वार कौ निरमान करायौ। जाके संग ही दुसमन के आकमरन के समै, उपयोग में लाइबे कूँ कैऊ खुफिया द्वारन कौ निरमान भयौ।

नगर में भौत सारे कुँज बनबाये गये। अनेक उद्यान लगाये गये ताकि फल दैबे कूँ उद्यत रहें और रंग - बिरंगे फूलन ते इस्थान आच्छादित हैकै महकतौ रेह।

राजा अग्र नै जा ठोया पै ऊँची-ऊँची अट्टालिका तथा राज - प्रासाद निरमित करबाये

राज-प्रासादन की सुन्दर, मोहक पंक्तीन में गली, चौराहे, बाग, बगीचा, तालाब, बाबरी, देवतान के मन्दिर बनबाये। इन इमारतन नै देख कै सुरगपुरी हैबे कौ भरम है जातौ हो।

तलाब, जलासयन में सारस, हँस, पारावत, कौयल, मयूरन की पालन-पोसन की समुचित विवस्था करी।

हाथी-घोरान के काजै अनेक साला निरमित कराई गईं।

अपने काजै भौत भव्य-बिसाल, संगमरमर युक्त और सिलप - कलान ते मण्डित प्रासाद बनबायौ, जाके सयन - कच्छ में सुबरन कौ पलग बिराजित हो।

राज के खजाने के काजै भव्य - भवन निरमान करायौ, जामें हीरा, जवाहरात, मोती, पन्ना, सुबरन, रजत खचाखच भरबाय दये गये।

जा ठीया पै जलासय, तालाब भौत बनबाये गये, जा कारन जाकौ नाम राजा अग्र नं अग्रोदक (अग्र कौ तलाब) रख दीयो।

नगर के बीचौ - बीच राजा नै महालच्छमी कौ बिसाल एवं भव्य मन्दिर कौ निरमान करायौ। जा मन्दिर में लच्छमी की पूजा सतत चलती रहतो ही। जा कारन अग्रोदक सदैव धन-धान सों पूरित रहतौ हो।

नगर के बैभब और सम्पन्नता ते खीज कै देवराज इन्द्र अग्रसेन ते जरबे लगौ और बानै, बिनके राज में बरसबौ बन्द कर दीयौ।

जब पानी महीनान तोली नॉय बरसौ तौ राज में अकाल पर गयौ। राज के अन्न-गोदाम खाली है गये। परजा-बालक, नारी, नर, पसु भूखे मरबे लगे। राजा चिन्तित है गये। पसु, पच्छी, नर तिराहि-तिराहि कर उठे।

तलाब, नदी, जलासय सूख गये। धरती बंजर है गई।

अग्रसेन नै पुरानी राजधानी प्रताप नगर पै अपने अनुज सूरसेन कूँ आसीन कर दोयौ हो, सो बिननै सूरसेन कूँ अपनी राजधानी में बुलायौ और बाकी देख-रेख कौ भार सूरसेन कूँ दैकै महाराज महालच्छमी की उपासना करबे घने बन में चले गये और तपस्या सुरू कर दई। तपस्या के बीच लच्छमी कूँ प्रसन्न करबे कूँ जि मन्तर पढ़बे लगे—

"ॐ हिरीम अस्ट लच्छमये, दारिद्रय बिनासनी, सर्व सुख समृद्धि, देहि देहि हिरीम ओम नमः।"

महालच्छमी कठोर तपस्या सौं परमन्न भई और साच्छात् हैकै बोलीं,—

तव वंशे मही सर्वा पूरिता च भविष्यति
तव बंशे जातिबर्णेषु कुल नेता भविष्यति
अद्यारम्भ कुले-तव नाम्ना प्रसिध्यति
अग्रवंशीया हि प्रजाः प्रसिद्धाः भुवन त्रय।
भुजा प्रसादं तव वसेत् नान्यस्मै प्रतिदापयत्।
येन सा सफला सिद्धिर्भूयात् तव युगे-युगे।
मम पूजा कुले यस्य सोडग्रवंशी भवष्यति।
इत्युक्त्वान्तदये लक्ष्मी समुद्दिश्य महावरम्।"

हे राजन! अपनी तपस्या कूँ बिराम देउ। गिरहस्त धरम भौत अनौखौ है, चौकि सब आसरम और बरन गिरहस्त में ही बिबस्थित हैं।

मैं आसीस दऊ ऊँ कि सम्पूरन धरती, तेरे बंस ते पूरन रहैगी। आज ते तेरौ कुल तेरे नाम सौं प्रसिद्धी पाबैगौ। अग्रबंसी धुजा तीनौ लोकन में बिख्यात होयगी।

तेरी भुजा में सदा प्रसाद रहे। जुग - जुग तोलीं तेरी सिद्धी सफल होय। जा कुल में मेरौ पूजन होय है—ऐसौ जि अग्रकुल है।

राजा गद्‌गद् हैकै महालच्छमी कौ दरसन-लाभ कर उठे, और बोले, "देवा! मेरे काजै अन्य कोई आग्या हो तो बताऔ। मैं आपके दरसन करकै धन्य है गयौ" और बु बिनकूँ साष्टाँग प्रनाग करबे लगे।

महालच्छमो कहबे लगीं, "तेरे राज में धन बैभव सदा रेहगौ। अन्न कौ कभू अभाव नॉय रहेगौ। जनता सुखी रेहगी। हे राजन्। तू कोल्हापुर जायकै नागराज महीधर की कन्या सुन्दरबती कूँ बरन् कर ला। ऐसौ करबे सों तेरे बंस एव कुल दौनों बढ़िगे।" कह कै महालच्छमी अन्तरध्यान है गई।

अग्रसेन नै सभासदन के सामीं कोल्हापुर जायकें नागराज महीधर की कन्या सुन्दरबती कूँ बरन करबे की बात कही। सबन नै समरथन कर दीयौ।

राजा नै अपने मुख्य सभासदन सहित सेना की टुकरी लैकै कोल्हापुर कूँ प्रस्थान कर दीयौ।

आगें-आगें अग्रोहा कौ धुज फैरातौ भयो, वाद्य बजाते सैनिकन के संग बढ़तौ जाय रह्यौ हो। हाथी पै महाराज अग्रसेन सुसोभित भये, आगें माऊँ बढ़ रये हे। बिनके संग धरमाचार्य और महामात्य चल रये हे—महाराजा अग्रसेन की जै बोलते भये।

मारग में अनेक बन, तड़ाग, जलासय मिले, जिनकूँ पार करते भये और जंगली खूँखार पसून पै विजै पाते भये, बीच-बीच में पड़ाब डारते भये अग्रसेन कोल्हापुर पहुँचे जहाँ सुयम्बर की तैयारी चल रई हीं।

म्हाँ जायकै दूत नै अग्रसेन के पहुंचबे की सूचना दई।

सुअम्बर में आये भये राजान के संग ही एक सिंहासन पै महाराज अग्रसेन कूँ हू बिराजमान कराय दीयौ गयौ।

जब पानी महीनान तोली नॉय बरसौ तौ राज में अकाल पर गयौ। राज के अन्न-गोदाम खाली है गये। परजा-बालक, नारी, नर, पसु भूखे मरबे लगे। राजा चिन्तित है गये। पसु, पच्छी, नर तिराहि-तिराहि कर उठे।

तलाब, नदी, जलासय सूख गये। धरती बंजर है गई।

अग्रसेन नै पुरानी राजधानी प्रताप नगर पै अपने अनुज सूर-सेन कूँ आसीन कर दोयौ हो, सो बिननै सूरसेन कूँ अपनी राजधानी में बुलायौ और बाकी देख-रेख कौ भार सूरसेन कूँ दैकै महाराज महा-लच्छमी की उपासना करबे घने बन में चले गये और तपस्या सुरू कर दई। तपस्या के बीच लच्छमी कूँ प्रसन्न करबे कूँ जि मन्तर पढ़बे लगे—

"ॐ हिरीम अस्ट लच्छमये, दारिद्रय बिनासनी, सर्व सुख समृद्धि, देहि देहि हिरीम ओम नमः।"

महालच्छमी कठोर तपस्या सौं परमन्न भई और साच्छात् हैकै बोलीं,—

तव वंशे मही सर्वा पूरिता च भविष्यति
तव बंशे जातिवर्णेषु कुल नेता भविष्यति
अद्यारम्भ कुले-तव नाम्ना प्रसिध्यति
अग्रवंशीया हि प्रजाः प्रसिद्धाः भुवन त्रय।
भुजा प्रसादं तव वसेत् नान्यस्मै प्रतिदापयत्।
येन सा सफला सिद्धिर्भूयात् तव युगे-युगे।
मम पूजा कुले यस्य सोडग्रवंशी भवष्यति।
इत्युक्त्वान्तदये लक्ष्मी समुद्दिश्य महावरम्।"

हे राजन! अपनी तपस्या कूँ बिराम देउ। गिरहस्त धरम भौत अनौखौ है, चौकि सब आसरम और बरन गिरहस्त में ही बिब-स्थित हैं।

मैं आसीस दऊ ऊँ कि सम्पूरन धरती, तेरे बंस ते पूरन रहैगी। आज ते तेरौ कुल तेरे नाम सौं प्रसिद्धी पाबैगौ। अग्रबंसी धुजा तीनौ लोकन में बिख्यात होयगी।

तेरी भुजा में सदा प्रसाद रहे। जुग - जुग तोलीं तेरी सिद्धी सफल होय। जा कुल में मेरौ पूजन होय है—ऐसौ जि अग्रकुल है।

राजा गद्‌गद् हैकै महालच्छमी कौ दरसन-लाभ कर उठे, और बोले, "देवी! मेरे काजै अन्य कोई आग्या हो तो बताऔ। मैं आपके दरसन करकै धन्य है गयौ" और बु बिनकूँ सास्टाँग प्रनाम करबे लगे।

महालच्छमो कहबे लगीं, "तेरे राज में धन बैभव सदा रेहगौ। अन्न कौ कभू अभाव नॉय रहेगौ। जनता सुखी रेहगी। हे राजन्। तू कोल्हापुर जायकै नागराज महीधर की कन्या सुन्दरबती कूँ बरन् कर ला। ऐसौ करबे सों तेरे बंस एव कुल दौनों बढ़िगे।" कह कै महा-लच्छमी अन्तरध्यान है गई।

अग्रसेन नै सभासदन के सामीं कोल्हापुर जायकें नागराज महीधर की कन्या सुन्दरबती कूँ बरन करबे की बात कही। सबन नै समरथन कर दीयौ।

राजा नै अपने मुख्य सभासदन सहित सेना की टुकरी लैकै कोल्हापुर कूँ प्रस्थान कर दीयौ।

आगें-आगें अग्रोहा कौ धुज फैरातौ भयो, वाद्य बजाते सैनिकन के संग बढ़तौ जाय रह्यौ हो। हाथी पै महाराज अग्रसेन सुसोभित भये, आगें माऊँ बढ़ रये हे। बिनके संग धरमाचार्य और महामात्य चल रये हे—महाराजा अग्रसेन की जै बोलते भये।

मारग में अनेक बन, तड़ाग, जलासय मिले, जिनकूँ पार करते भये और जंगली खूँखार पसून पै विजै पाते भये, बीच-बीच में पड़ाब डारते भये अग्रसेन कोल्हापुर पहुँचे जहाँ सुयम्बर की तैयारी चल रई हीं।

म्हाँ जायकै दूत नै अग्रसेन के पहुंचबे की सूचना दई।

सुअम्बर में आये भये राजान के संग ही एक सिंहासन पै महा-राज अग्रसेन कूँ हू बिराजमान कराय दीयौ गयौ।

कछू अबेर पीछै नागराज महीधर नै सुयम्बर को घोसना करो और सुन्दरबती दोनों हाथन में सुन्दर हार लैकै हर राजा के सामीं पहुँचती, बाकूँ निरखती, परखती।

नागराज कौ दूत प्रतेक राजा कौ परिचय सुन्दरबती कूँ देतौ। अपनौ परिचय सुनते ही सिंहासनारूढ़ राजा हार पहरबे कूँ ठाड़ौ हैकै अपनौ सीस झुकातौ, पर सुन्दरबती आगें बढ़ जाती और बु निरास हैकै खिसियानौ सौ रह जातौ।

जा तरियाँ पचासन राजान कूँ निरास करकै सुन्दरवती महाराज अग्रसेन के सामीं पहुँचो। बानैं अग्रसेन माऊँ निहारौ। बाके नैन अग्रसेन के नैनन में अटक कै रह गये। बाकूँ लगौ कि राजा ई बाकौ जनम-जनम कौ संगी है। बाके मन की सारंगी बज उठी। बाके मन-मिरदंग पै सुरसुती नाँच उठी। महालच्छमी नै बाके पाँयन कूँ आगे बढ़बे ते रोक लोनौ। बाकूँ अग्रसेन के नैनन में कामदेव ठुमकत भऐ दीखबे लगे जु बाकूँ अपने माँऊ बुलाय रये हे।

बहुत अबेर तोलों सुन्दरबती अग्रसेन के नैनन में अटक कै रह गई। बाकूँ लगौ कि अग्रसेन की नैनरूपी नाब पै सुन्दरबती जाय बैठी है और केवट बनकै अग्रसेन बाकी नैया कूँ खैंच रये हे।

बु अग्रसेन माऊँ खिचती चली जाय रई ही, मानो बु लोहौ होय, जु अग्रसेन रूपी चुम्बक माँऊ बरबस खिचौ चलौ जाय रहौ हो।

अग्रसेन मुस्काय उठे। सुन्दरबती कूँ लगौ कि बिरच्छन नै अग्रसेन के मुस्कायबे के संग हो झरझराय कै रंग - बिरंगे फूल चारों लंग बिखेर दीये होंय या सरोबर में कैऊ कमल खिल उठे होंय अथवा सुरग धरती पै उतर कै नाच उठौ होय, किंवा कामदेवनी के संग अनंग नाच उठौ होय, अथवा अमरत बहबे लगौ होय, जामें ते कैऊ घूँट भरकै सुन्दरबती अघाय कै अब तलक पीय चुकी होय।

सुन्दरबती अग्रसेन माऊँ खिचती चली गई। बानै हार अग्रसेन के गरे में पहराय दीयौ। जि देख कै अग्रसेन की जै-जैकार हैबे लगी।

पहले बारे सिंहासन पै देबराज इन्द्र सुन्दरबती कूँ बरन करबे की नोयत ते बिराजमान हे, पर सुन्दरवती नै देवराज माऊँ निहारौ हू नाँय और अग्रसेन कूँ वरमाला पहराय दई।

जि देख कै देवराज कुपित है गये। विननै अपनी कमर में टँगी खड़ग निकार लई और अग्रसेन पै परहार कर दीयौ, पर सुन्दरबती अग्रसेन के सामईं आय गई, जाते देवराज कौ बार खाली गयौ।

इतेक देर में महाराज अग्रसेन नै हू अपनी तरबार निकार लीनी और बु देवराज ते लोहौ लेबे लगे। दोनोंन में अस्त्र - सस्त्र चलबे लगे।

जि देख के नागराज महीधर देवराज की भरतस्ना करबे लगे और देवराज ते बोले, "देवराज पहलै तौ सुअम्बर में आपकूँ बुलायौ नाँय गयौ ···आप आय हू गये तौ सुन्दरवती की चाहत कूँ प्रधानता दैनी चहियै, चौकि जा सुयंबर कौ आयोजन सुन्दरबती के ताईं ही कीयौ गयौ है।"

देवराज कुपित है गये, "देवराज कूँ बिसार कै तुम्हारी कन्या नै मनुज कूँ बरन कीयौ है, जा कारन जामें हमारौ अपमान भयौ है···· अग्रसेन हमारे कोप कौ भाजन बननौ ही चहियै।"

अबेर तोलीं मनुज-देवता जुद्ध चलतौ रहौ, पर हार काऊ की नाँय भई। तबईं "नारायन, नारायन" करते भये, नारद जी परगट है गये जिननै अग्रसेन और देवराज में सन्धी करबाय दई।

देवराज नै अग्रसेन कूँ छाती ते लगाय लीयौ और बोले, "अग्रसेन हम तुम सौं परसन्न भये कि नारद जी के कहबे पै तुम नै हमते बैर-भाब भुलाय कै समझौता कर लीयौ। तुम्हारे राज की सोभा बढ़ाबे के काजे हम तुम कूँ 'मधुसालिनी' नाम की अप्सरा भेंट कर रये हैं।"

राजा अग्रसेन नै हू देवराज के प्रति सम्मान प्रकट करकै बिन कूँ सब तरियाँ ते सन्तोस दीयौ। बे राजा ते भौत परसन्न भये।

देवराज नै सुन्दरबती और नागराज महीधर कूँ हूं आसीस दीयौ कि सुन्दरबती सौभाग्यबती रहै। फिर बे अंतरध्यान है गये।

नागराज नै अग्रसेन कूं भेंट सरूप बहुमूल्य द्रव्य सुबरन, चाँदी, रथ, हाथी, हय-सेना भेंट करी।

राजा अग्रसेन सुन्दरबती कूँ अपने राज में अग्रोदक लै आये। जा परकार बैसाख माह के मृगसिर नच्छतर के समै महाराज अग्रसेन कौ ब्याह सुन्दरबती के संग भयौ।

देवराज ते समझौता करबे के कारन देवराज नै खूब मेह बरसायौ, जा कारन राज में धन - धान्य की बृद्धी भई। परजा राजा अग्रसेन की जै-जैकार करबे लगी।

५

अग्रोदक में एक लाख की आबादी ही। इहाँ के निबासी भौत समृद्ध समाज-हितैसी और संगठन-प्रेमी हे।

महाराज अग्रसेन के राज में जब कोऊ आगन्तुक आयकै बसतौ हो तौ अग्रोदक कौ परतेक घर बाकूँ एक ईंट और एक मुद्रा देतौ हो– जि एक आदर्श समतावादी परम्परा ही।

एक लाख घरन ते एक-एक ईंट मिलबे पै, आगन्तुक सरलता ते अपनौ आबास निरमान कर सकतौ हो और एक लाख मुद्रान ते अपनौ ब्यौपार आरम्भ कर सकतौ हो। जा कारन अग्रोदक में बेरोजगारी की समस्या नॉय जनम लेती ही। राज भली परकार सम्पन्न हो।

महाराज अग्रसेन एक आदर्स परजा - पालक हे। बिननै अपने राज में ऐसी विवस्था स्थापित करी ही कि जामें साहित्य, संस्कृति तथा राष्ट्र की उन्नति के संग नीति, धरम व सदाचार पै बल दीयौ हो। एक वर्ग-बिसेस के हित की भावना न हैकै बिनके राज में सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय कौ आदर्स हो।

कछू दिना पीछै रामदीन नाम कौ एक लुहार अग्रोदक में बसबे कूँ आयौ। बानै दरबार में जायकै गुहार करी। हरेक घर ते एक ईंट और एक-एक मुद्रा की बिबस्था है गई।

खाली धरती पै रामदीन नै आबास बनाय लीयो, मिले भये धन ते बु लुहार के काम के औजार और 'घन' मोल लै आयौ।

आबास के बाहर बानै भट्टी बनाय लई और आँच जरायकै लोहे के हथियार निरमान करबे लगौ—ढार, तरबार, भाले, बरछी, बल्लम आदि-आदि।

महाराज कूँ ग्यात भयौ तौ राज के काजै बाई ते हथियार क्रय करबे लगे।

तबई एक सिच्छक म्हाँ बसबे आय गये। बिनन हू एक लाख ईंटन ते आबास बनाय लीयौ। मिली भई लाख मुद्रान ते इस्थान पै पाठसाला खोल दई और समै - समै पै पाठसालान में जायकै अग्रोदक बासीन के बालकन कूँ उत्तम सिच्छा दैबे लगे।

एक सनिक हूँ म्हाँ आय बसे जिनके माध्यम सौं अग्रोदक बासीन कूँ सैनिक-सिच्छा मिलबे लगी और कुसल सैनिक बनकै महाराज की सेना में भरती है गये।

जाई तरियाँ कैऊ कवि, नृत्यकार, कलाकार, साहित्यकार, बैग्यानिक, धर्माचार्य, कृसक, महाजन म्हाँ आयकै बसबे लगे और राज ते पाई सुविधान ते आबास बनाय के अपनौ कारौबार चलायबे लगे।

'जा तरियाँ राज में सभी तरह के कारोबार सफलता सौं चलबे लगे। राज कला, संस्कृति, साहित्य, सस्त्र, सैनिक - सिच्छा, किरसी, व्यापार और सिच्छा कौ केन्द्र बन गयौ। अग्रोदक बासीन कूँ सभी तरियाँ की सुविधा मिल गई। बचपन को सिच्छा ते लैकै, सैनिक-सिच्छा हू बिनै मिलबे लगी और एक ते एक निपुन जोद्धा तैयार हैबे लगे।

वैग्यानिकन नै राज में गुप्तद्वार दीवार हटाय कै अलोप हैबे की बिद्या, बिना मौसम पानी बरसाबे की बिद्या कौ आबिसकार हबन करबाय कै कीयौ।

जब इन्द्र देवता हू कोप करकै पानी नॉय बरसाते तौ हबन करकै पानी बरसाय लीयौ जातौ और सूखी खेती लहराय उठती।

रथन में अधिक पहिया लगायकै तेज गति ते दौड़बे की तरकीब वैग्यानिकन की ही सूझ ही।

जगै-जगै पानी के सिरोत वैग्यानिक ही खोजते हे। कौन से मौसम में कौन सौ नाज खेतन में अधिक उपजैगौ जा बात कौ निरनय हू वैग्यानिक करते हे। कौन सी माँटी में कौन से फलदार विरच्छ उगाये जावें—जाकौ उत्तरदायित्व हू बिनकौ हो। दुसमन कित माऊँ ते

धाबौ बोल सकैं है—जि सुझाबौ और बिनते बचबे के ताईं सीमा पै कुन-कुन से निरमान करे जाने चहियै—जि वैग्यानिकन के ऊपर ही हो, जाई कारन किले की दीवार ऊँची उठाय कै, बाके तीनों ओर जलासय बनाये गये हे।

जुद्ध में कुन-कुन से विध्वंसक सामगरी और सस्त्रन कौ परयोग करनौ चहियै, दुसमन कौन-सी तरियाँ घेरा में लैनौ चहियै, हाथी और घोरा कैसे दुसमन की सेना कौ नास करबे में अपनौ जोगदान कर सकें। पुरुष सेना के संग नारी सेना कौ योगदान हूँ का तरियाँ महत्वपूर्ण है सके जि बताबौ सैनिकन की जुम्मेदारी ही।

साहित्यकार, कलाकार और नित्तकार दरबार में मनोरंजन कराते हे। कबिजन दरबार में कबिता करबे के अलाबा जुद्ध में मुठभेड़ लेते सैनकन में सम्बल भरबे का काम करते हे।

धरमाचार धरम कौ परचार करते हे कि धरम ही करम है। ऐसे-ऐसे गुनी बसते हे—अग्रोदक में।

एक दिन सबन नै मिलकै दरबार में पहुँच कै महाराज के दरसन करबे की सोची और सिग ही म्हाँ जाय पहुँचे, सबन कूँ दरबान नै दरबार में आसोन करायौ और महाराज के आइबे की प्रतीच्छा करबे लगे।

कछू अबेर पीछै नैपथ्य में ते स्वर सुनाई दीयौ, "सावधान ! सावधान !! गौ, ब्राह्मन, न्याय और परजा - पालक महा तेजस्वी श्री श्री १००८ महाराजाधिराज श्री अग्रसेन महाराज सभा में पधार रये हैं। महाराज की जे होय।"

जि सुनकै सबई सभासद ठाड़ै है गये। महाराज के सिंहासन पै बिराजते ही सभासद हू अपने-अपने आसनन पै बिराज गये।

तबई मन्तरी नै आग्या करी, "महाराज कूँ परसन्न करबे कूँ मधुसालिनी अपसरा कूँ नाच करबे कूँ बुलायौ जाय।"

मधुसालिनी अपसरा सभा में महाराज कौ जैकारों करती भई उपसथित भई। बाके आते ही सभी वादकन नै अपने-अपने बाद्यन पै ताल दैबौ आरम्भ कर दीयौ।

तबला और मृदंग की ताल पै मधुसालिनी—निरत्त करबे लगी। बाके पाँयन में घुँघरुन की झंकार ते सभा में थिरकन हैबे लगी, तबई महाराज के संकेत पै बाद्य बन्द है गये। सब ही सभासद, वादक और मधुसालिनी महाराज की ओर अवाक् हैकै निहारबे लगे।

मधुसालिनी बोली, "मोते कोई अभद्रता है गई होय तौ छिमा करैं महाराज! पर संगीत और निरत्त जब चरम सीमा पै पहुंचबे कूँ आतुर हो तौ विवधान कौ कारन प्रभो?"

महाराज बोले, "तुम्हारे प्रस्न ते हम परसन्न भये मधुसालिनी! वाद्यन के बादन ते हू हम सुखी भये, पर तबला बादक की ताल तबला पै ठीक नॉय पर रही। लागै है कि तबला - बादक कौ अँगूठा खराब है।"

तबई तबला बादक ठाड़ौ हैकै सभा में सासटाँग करकै गुहार करबे लगौ, "महाराज! मेरौ अपराध छिमा करबे जोग है। मोय छिमा-दान देउ महाराज!"

महाराज मधुसालिनी ते पूँछ उठे, "बताय सकौ कि तबला-बादक के अँगूठा में कहा दोस है?"

अबेर तोली, मधुसालिनी मौन हैकै ठाड़ी रही। तब महाराज बोले, "हम तबला-बादक के साहस कूँ बधाई दैमें है कि अँगूठा खराब हैबे पै हू बु तबला पै ताल देते रहे और कोऊ बिनके जा दोस कूं नॉय समझ सकौ, पर हमें सुनते - सुनते लगौ कि बिनकौ अँगूठा मौम कौ बनौ है।"

जि सुनकै सभासद, मन्तरीगन, मधुसालिनी आदि अचम्भित रह कै महाराज के संगीत-प्रेम पै मुग्ध है गये।

तबला-बादक ठाड़ौ हैकै बोल परौ, "मोय छिमा करौ महाराज! मेरौ अँगूठा मौम कौ ई बनौ है। मैं समझतौ हो कि मधुसालिनी के निरत्त में मगन हैकै मेरे जा दोस कूँ कोई नॉय जान पाबैगौ, पर आप पारखी हैं। मेरौ दोस छिमा करौ महाराज!"

महाराज बोले, "तबला-बादक! तुम निडर हैकै हमारी सभा में तबला-बादन करते रहौ, चौंकि विकलांग कूँ हू साधना करबे कौ अधिकार है। हम तुम ते परसन्न भये।"

महाराज नै आग्या करकै पाँच सौ मुदरान कौ पुरसकार तबला बादक कूँ परदान करायौ।

सगीत-सभा समाप्त हैबे के पीछै मन्तरी बोले, "महाराज की जै होय! महाराज की कीरती सुनकै कछू बिस्तापित, जु अग्रोदक में आयकै बसे हैं और अपनौ - अपनौ आबास निरमान करकै अपनौ कार-ब्यौपार करबे लगे हैं, आपके दरसन करबे पधारे हैं जैसे लुहार रामदीन, सिच्छक, सैनिक, कलाकार, कवि, साहित्यकार, निरत्तकार, वैग्यानिक, धरमाचार, किरसक, महाजन आदि-आदि।"

तबई सब ठाड़े हैकै महाराज की जै-जैकार करबे लगे। महाराज नै सिगन कूँ आसीस दीयौ और बोले, "आपकूँ मेरे राज में कोऊ तकलीफ होय या मोते कोऊ सिकायत होय तौ मोय निडर हैकै बताऔ, चौंकि मैं अधिक सौं अधिक आपकी सेवा कर सकूँ।'

कवि बोल उठे, "हे छतरीन में सिरेस्ठ आप ग्यान के भण्डार हैं। आपके राज में काऊ कूँ कोऊ असुविधा हैई नॉय सकै।"

सिच्छक बोले, "आप दया और सिच्छा के सागर हौ, परजा तौ आपकूँ पूतन जैसी प्यारी है।"

धरमाचार कह उठे, "आप तौ धरती पै धरम के अवतार हौ। आपकी जै होय।"

विग्यानिक बोले, "विग्यान आपके हिरदै में बिराजमान है। जि का कम बात है कि आप हमते पूँछ-पूँछ कै, अपनी हिरदै-तराजू में तोल कै सिग काम करौ हौ। आपकी जै होय।"

तबई एक नपुंसक बोल परौ, "महाराज! मेरी हू आपते एक बिनती है।"

"निरभय हैकै कहौ।" महाराज बोले, "तुम हमते का अपेच्छा करौ हौ?"

"महाराज! न हम पुरुस हैं और न नारी। हम 'हीजरा' कहामें हैं। हम नाच-गायकै रोजी-रोटी कमाइबें हैं। हमकूँ हूँ रहबे कूँ जग्गै दै देउ।"

"इत्ती-सी बात ?' महाराज हँस कै बोले, "तुम हू हमारे राज में रह सकौ हौ और ब्याह-बरात में, काऊ के इहाँ बाल-बच्चा हैबे पै नाच-गायकै रोजी-रोटी कमाय कै खाय सकौ हौ।"

"महाराज की जै-जैकार" कहकै नाच तौ भयौ हीजरा दरबार ते गमन कर गयौ।"

"और तुम जुबक मौन चौं साधे ठारे हौ। तुम हू अपनी फरमाइस कहौ।" महाराज नै जुबक कूँ उत्साहित कीयौ।

जुबक बोलौ, "महाराज ! मैं जो माँगूगो। बु नैंक नॉय भौत कठिन काम है।"

"बोलौ तौ सही। हम बचन दै रये हैं कि जु माँगौगे पाओगे। जि महाराज कौ बचन है।," महाराज बोले।

"प्रानन की रच्छा चाहूँ" जुबक बोलौ।

"तुम बे हिचक कहौ।" महाराज नै आस्वासन दैकै कही।

"महाराज !" जुबक कहबे लगौ, "जा नगर के हर जुबक कूँ एक दिना के काजै राजा बनायकै, बाकूँ सजे भये घोड़ा पै बैठार कै कमर में कटार और काँछौ बाँध कै, चमर ढुराय कै, सीस पै छत्र लगाय कै, म्हौ पै सेहरा और सुआफा बाँध कै, ढोल - ताँसेन के संग नगर में बाकी सोभा निकारी जाय।" और बु हाथ जोर कै ठार है गयौ।

महाराज बाकी इच्छा सुन कै छम्म रह गये। अबेर तोलीं बाकी बात पै बिचार करते रह गये। अबेर पोछै बोले, "तुम्हारी बात हू पूरी होयगी जुबक।"

"कैसे महाराज ?" मन्तरी पूंछ उठौ।

"ब्याह के समै पै हर जुबक सजी भई घोड़ी पै बैठकै, कमर में काँछौ और कटार बाँधकै, सीस पै छत्र लगायकै, म्होड़े पै सेहरा और सुआफा बाँधके चमर ढुरायकै, ढोल - ताँसेन के संग नगर में राजा-महाराजान जैसों पहरावौ पहर कै कन्याबारे के द्वार तोली अपनी बरात लै जाय सकैगौ।"

महाराज की जै-जैकार हैंवे लगी और सभा भंग है गई।

६

समय खूँटी पै टँगी रेसमी फरिया की तरियाँ सरकतौ चलौ गयौ। राज - गुरुन नै महाराज कूँ सलाह दई कि पुत्रन की प्राप्ति के काजै बे यज्ञ करें।

महाराज नै सबते पहलै गर्ग मुनि के माध्यम ते महारानी सुन्दरावती के संग यज्ञ आरम्भ करौ। जाई तरियाँ महाराज नै दूसरौ यज्ञ गोमिल रिसि के द्वारा महारानी माधवी के संग कीयौ। जा तरियां महाराज नै रिसीन द्वारा अठारह यज्ञ सम्पन्न कराये। जब अठारहवें यज्ञ के पहलै आहुति कौ समै आयौ तौ जा यज्ञ कूँ कराइबे बारे गौतम रिसि नै महाराज सों पसु-बलि दैबे की बात कही। महाराज बोले, "पूरब जनन और मैंने हिंसा न करबे कौ प्रन लीयौ हैं, जा कारन मैं पसु-बलि नॉय दै सकूँ।"

जि सुनकै यज्ञ कूँ अधूरौ छोर कै गौतम रिसी गमन कर गये।

तबई यज्ञ - देवता प्रगट हैकै बोले, "हे राजन् ! हम आपके अहिंसा के ब्रत के पालन सों भौत प्रसन्न भये। हमनै आपकौ यज्ञ प्रन मानौ। आपकूँ सत्रह यज्ञन सौं जो फल मिलैगौ, वही अठारहवें यज्ञ सों मिलैगौ।"

जा तरियां यज्ञ-देवता की किरपा सों महारानी सुन्दरबती तथा महारानी माधवी के गर्भन सों नौ - नौ पुत्र अर्थात् अठारह पुत्र महाराजा अग्रसेन कै भये।

बहुत पीछै महाराजा अग्रसेन नै अपने राज कूँ अठारह भागन में करकै अपने अठारह बेटान कूँ अपने राज कौ कार-भार सोंपो और खुद अग्रोहा कूँ राजधानी बनाय कै महीं ते राज कौ संचालन करते रहे।

× × ×

एक दिना की बात है, अपने अठारहों पुत्तरन के संग महाराजा अग्रसेन बन में घूमबे कूँ निकर गये। बई जग्गै पै परसुराम जी बिनकूं दीख गये। बिननै परसुराम जी कूँ प्रनाम कीयौ।

जब परिचय भयौ कि बे अग्रसेन हैं और क्षत्री हैं तौ कुपित हैकै परसुराम बोले, "मैंने धरती ते क्षत्रीन कूँ नास करबे कौ प्रन लोयौ है। या तौ मोते जुद्ध करौ अथवा अपनौ समरपन कर देउ।"

अग्रसेन जुद्ध करबे कूँ तैयार है गये और दोनोंन में अठारह दिनान तक घमासान जुद्ध भयौ। दोनोंन में ते एक हू न हारौ। परसुराम ने अग्रसेन के अठारहों पुत्तरन कूं मूरछित कर दीयौ और बोले, "राजन् ! जब आपके बेटा नाँय रहिंगे तौ आपकौ छत्री बंस कैसैं आगें चलैगौ। यदि आप अपनौ बंस चलानौ चाहौ हौ तौ छत-रीय बंस त्याग कै वैश्य बंस गिरहन कर लेउ। यही मेरी आग्या हू है।"

"रिसी-मुनीन की आग्या कौ तौ पालन करनौ ही परैगौ।" कहकै तब ही ते महाराजा अग्रसेन नै वैश्य - धरम अंगीकार कर लीयौ।

परसुराम नै बिनके पुत्तरन कूँ ठीक कर दीयौ। पर महाराजा अग्रसेन सदा महाराजान की तरियां ही रहे। वैस्य होते भये हू बे महाराजान की बेस-भूसा में सदैव विभूसित रहे। आज हूं महाराजा अग्रसेन कौ नाम भौत सम्मान ते लीयौ जावै है।

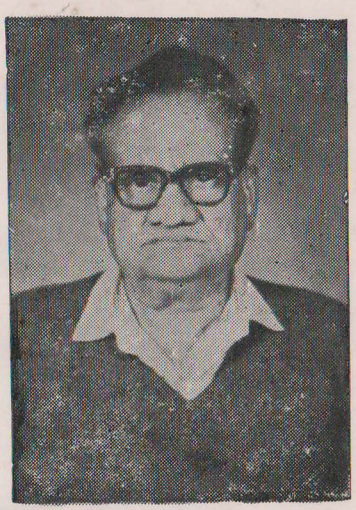

डॉ. श्याम सुन्दर 'सुमन' अग्रवाल

उपन्यास - लेखक